कीमतः 3.00 रुपये मात्र

अंक9, जुलाई–2002

विश्व हिन्दी मासिक पत्रिका

विश्व स्नेह समाज

0नैना का धारावाहिक उपन्यास "दिल का पैगाम"0 ललिता शास्त्री ने विदेशी चूड़िया क्यों तोड़ी

तीन कहॉनिया

शिक्षा का सही मापदण्ड क्या हो?

पहले गैर राजनीतिक राष्ट्रपति होंगे मिसाइल पुरुष : कलाम

स्थापित : 1954 फोन न0 : 617631

अलहमरा फारुकी गर्ल्स इण्टर कॉलेज,

(शाखा :किदवई मिमोरियल गर्ल्स इण्टर कॉलेज, हिम्मतगंज, इला0)

कसारी–मसारी रोड, (अतीक अहमद विधायक के घर के सामने), चकिया, इलाहाबाद

नर्सरी से कक्षा 5 तक हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम

कक्षा : 12 विज्ञान वर्ग

1. पुस्तकालय एवं प्रयोगशाला की सुविधा
2. अनुभवी अध्यापिकाओं द्वारा शिक्षा की व्यवस्था

पबंधक
ज़मीला फारुकी

प्रधानाचार्या
डॉ0 शाहीन अहमद

ऋषि पब्लिक स्कूल

बिशप जार्ज स्कूल, इलाहाबाद के निर्देशन में, आई.सी. एस.ई. बोर्ड नई दिल्ली से संबंद्ध

ओमप्रकाश सभासद मार्ग, कालिन्दीपुरम्, राजरुपपुर, इलाहाबाद, दूरभाष :0532–431100,मोबाइल:9839051321, ई–मेलः rishipublicschool@usa.net

नर्सरी, प्रेप, यू.के.जी. एवं कक्षा एक से आठ तक

मुख्य विशेषताएं :

1. अनुभवी एवं योग्य शिक्षको द्वारा शिक्षा की व्यवस्था।
2. कम्प्यूटर, लाइब्रेरी, विज्ञान प्रयोगशाला, संगीत कक्षाओं की सुविधा

संस्थापक प्रधानाचार्या
श्रीमती शकुन्तला सिंह

Phone : 633763

चिल्ड्रेन्स एकाडेमी

एच.आई.जी–3, प्रीतम नगर, इलाहाबाद

प्री0 नर्सरी से कक्षा आठ तक

अनुभवी अध्यापिकाओं द्वारा उचित शिक्षा का प्रबंन्ध।

प्रधानाचार्या
प्रीति बोस

एफ.एम.ए.ए.एम. ओरियन्टल कॉलेज

(फारुकी ओरियन्टल कॉलेज)

फूलपूर, इलाहाबाद

कक्षाःनर्सरी से आठ तक अंग्रेजी माध्यम

एक से 10 हिन्दी माध्यम

प्रबन्धक
शमीम फारुकी

प्रधानाचार्या
सीमा केशरवानी

Phone : 697859

निशा ज्योति संस्कार भारती विद्यालय

नैनी, इलाहाबाद

प्री0 नर्सरी से कक्षा आठ तक

अनुभवी अध्यापिकाओं द्वारा उचित शिक्षा का प्रबंन्ध।

प्रधानाचार्या
सपना गोस्वामी

Phone : 636292

पितम्बर मेमोरियल पब्लिक स्कूल

पितम्बर नगर, प्रीतम नगर, इलाहाबाद

अंग्रेजी/हिन्दी माध्यम

कक्षा :नर्सरी से आठवीं तक

संरक्षक
श्री हुकुम चन्द

प्रबंधक
विनोट कुमार कुशवाहा

☎:461402

फैशन लेडीज टेलर्स

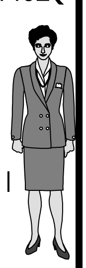

735/1, जायसवाल मार्केट, कटरा, इलाहाबाद

हमारे यहॉ सभी प्रकार के लेडिज सूट की सिलाई विशेष कारीगरों द्वारा उचित मूल्य पर की जाती है।

एक बार सेवा का मौका अवश्य दे।

एक बार आयेगे विज्ञापन पढ़कर,
बार–बार आयेगे काम देखकर।

प्रो0 राकेश गुप्ता

रोग़न चन्द्रमा

सरदर्द, समलबाई, चक्कर, दिमाग़ी कमज़ोरी और आँखों की रोशनी के लिए लाभदायक टानिक।

नोट : सर माथे और कनपटी पर मालिश करें।

वर्ष :1, अंक 9, जूलाई2002
हिन्दी मासिक पत्रिका
स्नेह समाज

संरक्षक :श्री बुद्धिसेन शर्मा ☎:657075

संपादक एवं प्रकाशक :
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

कार्यकारी संपादक :
डॉ0 कुसुम लता मिश्रा

साहित्यसंपादक : डॉ0 भगवान प्रसाद उपाध्याय

सलाहकार संपादक :नवलाख अहमद सिद्दीकी

विज्ञापन व्यवस्थापक / प्रबंध संपादक
श्रीमती जया द्विवेदी

सहायक संपादक :
0 रजनीश कुमार तिवारी 0 सीमा मिश्रा

ब्युरो :
गिरिराजजी दूबे (गोरखपुर)
ज्ञानेन्द्र सिंह (मिर्जापुर)
सोशन एलिजाबेथ सिंह,
जागृति नगरिया (सामा0 व्यूरो, इला0)
श्रीमती पुष्पा शर्मा (पटना)
सूर्यकांत त्रिपाठी (फतेहपुर)
मो0 तारिक ज्या (जौनपुर)
मिस संहमित्रा भोई (उड़ीसा)
इन्द्रहास पाण्डेय (गुजरात)
आर0जे0केशरवानी (मुंबई)
सुजीत सिंह (प्रतापगढ़)
मिस लक्ष्मी हजोअरी (आसाम)

कम्पोजिंग एवं डिजाईनिंग :नितीन काम्पलेक्स, मेवा लाल की बगियानैनी, इला–8

सम्पादकीय कार्यालय :
एम.टेक कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर, कौशाम्बी रोड, धुस्सा, इलाहाबाद फोन ☎ 432953
कार्यालय :एफ.सी.एल.सी.नितीन काम्पलेक्स, मेवालाल की बगिया, नैनी इलाहाबाद,

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायलीय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

स्वत्वाधिकारी, सपांदक, प्रकाशक व मुद्रक **गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी** द्वारा **भार्गव प्रेस**, बाई का बाग, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 277/486, जेल रोड, चकरघुनाथ, नैनी, इलाहाबाद से प्रकाशित किया।

सम्पादकीय

प्रिया पाठक मित्रों,

नमस्कार!

आपकी प्रतिक्रियायें पत्रिकाओं के श्रेष्ठ पथ की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा देती है, मुझे आपकी अन्वेषी दृष्टि पर अति प्रसन्नता एवं गर्व है कि आप **विश्व स्नेह समाज** को सांगो पांग पठन करते है और अपने दुर्लभ सुझाव हमें भेजते है। अतिशीघ्र यह पत्रिका नवीन परीधान एवं नये सौष्ठव में साहित्य वांडग्मय में प्रवेश कर रही है। आशा है कि आपकी सहभागिता यहॉ अवश्य रहेगी। इसी प्रकार; क्योंकि बिना आपके हम रीतें है, अकिंचन है। दोस्तों हम श्रम कर रहे है, साध्य एवं साधान दोनों में अनुकूलन करने का प्रयास है। हमारे पत्रिका परिवार के सदस्य भी इस कार्य में सश्रम जुटे हुए हैं। आपकी मनचाही पत्रिका पूरे दमखम के साथ समाज को आलोकित करे, उसे दिशाज्ञान दें। हमारे सदस्यों की संख्या निरंतर बढ़ रही है। यह शुभ संकेत है। पत्रिका के सुदीर्घ एवं सलक्ष्य जीवन की।

मित्रों; समय और श्रम की उपयोगिता ही मुख्य है, जो काम से जी चुराते है। वे जीकर भी मृत प्रायः है। गरीब है, वे पग, पग पर मरते है अपमानित होते हैं जो आलसी निकम्मे है, वे लड़ेगे, जुआ खेलेंगे, पेरशान करेगें, ये शैंतान आपके दिमाग पर अधिकार न कर लें इसके लिए सावधान रहें। मन के शैतान को काम करने दीजिए। शारीरिक श्रम की उपेक्षा मत कीजिए, श्रम और सम्पत्ति में कोई अन्तर नहीं है। किसान धरती की छाती चीर कर अन्न उपजाता है। मल्लाह नदीं की छाती चीर कर मछली निकालता है, जय, प्रंशसा जायदाद ये श्रम के पुरस्कार है। इसी तरह किसी पत्रिका का सृजन बर्द्धन करना श्रम साध्य कार्य है और उसका समाज के लोंगो द्वारा ग्रहण, पठन एवं मनन करना एक कुशल साहित्यकार की जायदाद एवं पुरुस्कार है।

हमारा प्रयास है कि लोगों के हृदय स्नेहासिक्त हो लोकमंगल की भावना का विकास हो, जिसे आप लोगों कि रुचि और जानकारी पाकर उसे पूरा करने का अथक प्रयास पत्रिका के लोकप्रियता का सबसे बड़ा सबब है। हम अपने हर अंकों में उतरोत्तर उसे पूरा करने का प्रयास भी करते हैं। पत्रिका में, साहित्य, ज्योतिष, स्वास्थ्य, सामाजिक घटनाएं एवं अब हर तीसरे महीने के बाद 'अंक विशेष' के द्वारा इसमें काफी कुछ विषय वस्तु देने का प्रयास रहेगा।

और अन्त में इस नवसवंत्सर की शुभकामनाओं के साथ–

"लें अतीत से ही उतना जितना पोषक हों।"

कुसुम लता मिश्रा

बेबाक

कोई बाहरी ताकत हम पर आंख न उठा सके, इसके लिए परमाणु प्रतिरोधक क्षमता से लैंस होना जरुरी है। जब हम शक्तिशाली होंगे, तब हमला करने की कोई जुर्रत नहीं करेगा।

डॉ0 अब्दुल कलाम,
राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार

राष्ट्रपति चुनाव लड़ने का मेरा असली मकसद देश के संविधान के तहत अल्पसंख्यकों के हितो की रक्षा करना है।

लक्ष्मी सहगल,
उम्मीदवार राष्ट्रपति पद

पाकिस्तान की ओर से होने वाली घुसपैठ अब करीब–करीब रुक गई है। बावजूद इसके फिलहाल सीमा से सेनाओं की वापसी का कोई प्रश्न ही नहीं उठता।

जार्ज फर्नांडिस,
रक्षामंत्री, भारतसरकार

हमेशा कोई राजनेता ही राष्ट्रपति पद क्यों संभले? अब्दुल कलाम युवकों के लिए प्रेरणा स्रोत हैं और युवक उन्हें अपना रोल मॉडल मानते है।

पी.ए.संगमा,
पूर्व लोकसभा अध्यक्ष,

कार्यकर्ताओं का अपमान बरदाश्त नहीं होगा।

विनय कटियार
नवनियुक्त प्रदेश अध्यक्ष, भाजपा

मुशर्रफ को लगता है कि अमेरिका की तरफ से दबाव बढ़ रहा है, तो वह अपनी गतिविधिंया रोक देते हैं, लेकिन जैसे ही वहां से दबाव हटता है, वह फिर से उन गतिविधियों में सक्रिय हो जाते हैं।

बेनजीर भुट्टो,
पूर्व प्रधानमंत्री, पाकिस्तान

फिलहाल मेरा मानना है कि दोनों देशो बीच तनाव में थोड़ी कमी आई है। राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ ने मुझसे कहा है कि पाकिस्तान की गरिमा और सम्मान की रक्षा करते हुए युद्ध टालने के लिए तैयार है।

रिचर्ड आर्मिटेज
उप विदेशमंत्री, अमेरिका

यह दौर साक्षा सरकारों का है, ऐसे में राजनीतिक दलों को मिल–जुल कर काम करने का स्वभाव विकसित करना चाहिए।

अटल बिहारी बाजपेयी
प्रधानमंत्री, भारतसरकार

भारत की सूचना प्रोद्योगिकी प्रणाली पर हैंकिंग तथा अन्य तरीकों से होने वाले हमलों पर गंभीर चिंता जताई हैं। इसे रोकने के उपायों के तहत देश में बहुउद्देशीय 'नेशनल सिटीजन कार्ड' जारी करना चाहिए।

ए.पी. जे. अब्दुल कलाम
परमाणु विज्ञानी,

मैंने सीमापार से जारी आतंकवाद व घुसपैठ स्थायी रुप से रोकने का वादा कभी नहीं किया था।

परवेज मुशर्रफ
राष्ट्रपति, पाकिस्तान

जब तक सूबे को वृहत्तर स्वायत्तता नहीं दी जाती, यहां अमन कायम नहीं हो सकता।

डा. फारुक अब्दुला
मुख्यमंत्री, जम्मू–काश्मीर

मुख्यमंत्री मायावती जो भी कर रही है, सब ठीक कर रही है।

डॉ0 मुरली मनोहर जोशी
केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री, भारतसरकार

भाजपा ने विधायकों की संख्या 88 से 44 होने के डर से बसपा को सरकार चलाने का समर्थन दिया।

सुश्री मायावती,
मुख्यमंत्री उ0प्र0

आपको हमारा यह स्तम्भ कैसा लगा, इस पर अपने विचार हमें अवश्य भेजें। अच्छे विचारों को पुरस्कृत किया जायेगा

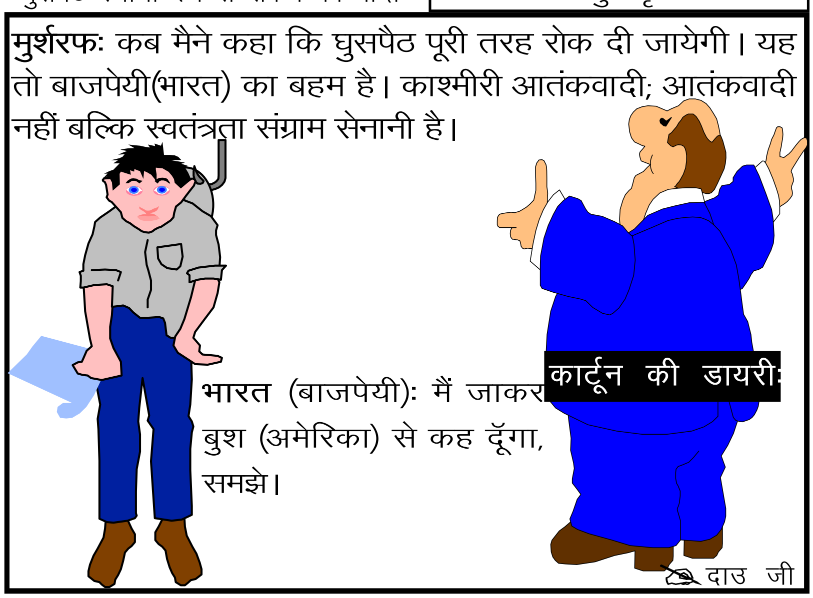

पहले गैर राजनीतिक राष्ट्रपति होंगे मिसाइल पुरुष : कलाम

☞ गिरिराजजी दूबे

अब्दुल पाकिर जैनुलआबदीन अब्दुल कलाम विक्रम साराभाई को अपना आदर्श मानते है और उनके साथ कई उपग्रहों के विकास पर काम कर चुके हैं। कलाम ने 1996 में 2020 तक के भारत के लिए एजेंडा तैयार किया जिसका अंतिम लक्ष्य देश को दुनिया के विकसित देशों की टोली में शुमार करना है। लेकिन जब उनकी कल्पनाओं और उनकी परियोजनओं के कसीदें कढ़े जा रहे हैं तो मौजू सवाल यह है कि उनको कार्यरुप में परिणित करने को लेकर हमारी सरकारों की सोच क्या है, तैयारी क्या है और कितना काम हुआ है?

बहरहाल, जब कलाम देश के पहले गैर–राजनीतिक राष्ट्रपति बनने की ओर अग्रसर है तो सबसे ज्यादा उम्मीद विज्ञान जगत को है। इस समुदाय को प्रेरणा देने के लिए तो विज्ञान–प्रौद्योगिकी मंत्री मुरली मनोहर जोशी का यह कथन ठीक है कि 'कलाम की उम्मीदवारी से सबसे बड़े संदेश यह गया है कि इस देश में बिना राजनीतिक दल का सदस्य बने भी शीर्ष पद पर पहुंच सकते हैं। लेकिन सवाल है कि राष्ट्रपति पद की सीमांए उनको क्या–क्या करने देंगी?

उनके सामने खड़ी है नेताजी सुभाषचन्द्र बोस द्वार गठित आजाद हिंद फौज की रानी झांसी रेजिमेंट का नेतृत्व कर अपने जीवनकाल में ही किंवदंती बन चुकी कैप्टन लक्ष्मी सहगल। सहगल के सेनापतियों की बुद्धिमता पर भले ही भरोसा करना कठिन हो, पर उनकी निष्ठा, साहस और निष्काम भाव की प्रशंसा किए बिना नहीं रहा जा सकता।

इस बार का चुनाव कई अर्थो में अनोखा है। राष्ट्रपति पद के दोनों ही उम्मीदवार समूचे देश के आदर के पात्र हैं। दोनों ही का जीवन प्रेरणास्रोत हैं। दोनों ही अपने तपस्वी जीवन और एकनिष्ठ साधना के लिए विख्यात है। इसीलिए यह व्यक्तियों की टकराहट वाला चुनाव नहीं, बल्कि राष्ट्रपति पद के महत्व, उसके लिए आवश्यक अर्हताओं और उसकी भूमिका के बारे में दो परस्पर विरोधी दृष्टियों की टकराहट वाला चुनाव है।

राष्ट्रपति के चुनाव के पहले की राजनीतिक सरगर्मियां शुरु हुई, तो न प्रध ानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के दिमाग में अब्दुल कलाम का नाम था और न ही मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव हरिकिशन सिंह सुरजीत को कैप्टेन लक्ष्मी सहगल की याद आई थी। गुजरात में हुई भीषड़ मुसलिम विरोधी हिंसा और उसे भाजपा की सरकार और सहयोगी संगठनों द्वारा दिये गए समर्थन के बाद वाजपेयी चाहते थे कि किसी अल्पसंख्यक को राष्ट्रपति बनाया जाए।

वैसे राजनीतिक नेताओं की तरह वितृष्णा भाव से देखने वाले एक वर्ग की राय बन रही है कि कलाम ऐसा कुछ जरुर करेंगे जो अभी तक किसी राष्ट्रपति ने करना नहीं चाहा था। मिशन–2000 में उन्होंने कहा है–'राजनीतिक नेतृत्व, संसद और विधानसभाओं, केन्द्र तथा राज्यसरकारों को यह घोषित करना चाहिए कि 2020 तक भारत को हम विकसित राष्ट्र बनाएंगे। इससे देश को समृद्धिशाली बनाने की मुहिम चल निकलेगी। उम्मीद है कि कलाम अपनी नई भूमिका में राजनैतिक नेतृत्व से सबसे पहले यही संकल्प करवाएंगे।

संस्थापित : 1987 फोन न0:636421

उ0प्र0 सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त

श्यामलाल इण्टर कॉलेज

चकिया, कसारी–मसारी, इलाहाबाद

25 जून से प्रवेश प्रारम्भ (बालक/बालिकाओं)

कक्षा : केजी से 12 तक (विज्ञान एवं कलावर्ग)

प्रधानचार्या
सुनीता कुशवाहा

प्रबंधक
शंकर लाल कुशवाहा

शिक्षा का सही मापदण्ड क्या हो?

✎ सपना रायजादा

भारतीय संविधान, भारतीय परिवेश की समस्याओं पर आधारित है, जिसमें असमानता को दूर करने की बात कही गयी है, कहना न होगा कि समन्वयवादी व्यवस्था की आधारशीला समता मूलक शिक्षा है, किसी वस्तु विशेष के अंग को समझने के लिए हमें पहले यह जानना होगा कि वास्तव में वस्तु विशेष का मतलब क्या है, तत्पश्चात ही हम उसके सही स्वरुप तथा मापदण्ड का निर्धारण कर पायेंगे।

"शिक्षा वह प्रणाली है जो मनुष्य के मस्तिष्क में सुधार करती है एवं आत्मा को पवित्र करती है।"

शिक्षा मनुष्य की पूंजी है जिसे लेकर मनुष्य अपने जीवन पथ पर सुगता से आगे बढ़ता है। वास्तव में शिक्षा मानवीय विकास का एक प्रभावशाली साधन है, शिक्षा जड़ को चेतन बनाने की प्रक्रिया है। हमनें जब भी विकास सिद्वातों पर दृष्टिपात किया हमें शिक्षा का क्षितिज नजर आया। जहॉ मन रुपी आकाश एवं मस्तिष्क रुपी धरती मिलते हुए दिखलाई पड़े।

अब प्रश्न यह उठता है कि शिक्षा नीति में परिवर्तन की कौन सी दिशा और प्रक्रिया अपनायी जाये जो शिक्षा में फैली तमाम विसंगतियों का निवारण कर सके। इस प्रश्न के सम्यक समाधान के लिए हमें कतिपय मनीषियों के विचारों की गहराई में उतरकर शिक्षा के अभिप्राय व मानदण्डों की परख करने के बाद समाधान निकाला जा सकता है। जैसे—महर्षि अरबिन्द ने सच्ची राष्ट्रीय शिक्षा की विवेचना करते हुए कहा है—"सच्ची और सजीव शिक्षा केवल वही कही जा सकती है जो मनुष्य की इस तरह से सहायता करें की उसके अन्दर जो भी शक्ति सामर्थ्य निहित है वह बाहर अभिव्यक्त होकर उसके जीवन में अपन पूरा लाभ प्रदान करें तथा मनुष्य जीवन का जो भी सम्पूर्ण उद्देश्य और सम्भावना है, उसकी संसिद्धि के लिए तैयार करें।"

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार—"सभी प्रकार की शिक्षा और अभ्यास का उद्देश्य निर्माण ही है। वस्तुतः जिस अभ्यास से मनुष्य की इच्छा शक्ति का प्रवाह और प्रकाश संयमित होकर फलदायी बन सके, उसी का नाम शिक्षा है।"

इस प्रकार शिक्षित व्यक्ति मुक्ति का द्वार खोल लेता है। वर्तमान समाज में अशिक्षित व्यक्ति का कोई अस्तित्वव नहीं है, भले ही वह पूॅजीपति क्यों न हो। सिर्फ धन सम्पन्न मात्र हो जाने से ही मनुष्य समाज का प्रमुख व्यक्ति नहीं कहलाता, प्रमुख व्यक्ति होने के लिए मनुष्य को धन सम्पन्न होने के साथ—साथ शिक्षित भी होना पड़ता है।

कई उपनिषदों में बार—बार यह प्रार्थना की गई है कि—"मैं स्पष्ट व पर्याप्त सुन सकूॅ तथा देख सकु इस प्रकार बेहतर, पवित्र, सूक्ष्म एवं गहराई तक देखना सुनना आकांक्षा करना ही शिक्षा का मूल उद्देश्य है।" भारतीय सन्दर्भ में शिक्षा का यह उद्देश्य पूरी तरह सफल नहीं हो पाया

स्थापित 1972—73 *फोन न0 631782*

सज्जन विद्या मन्दिर

पी.ए.सी. मेन गेट के सामने, 15, हरवारा, धूमनगंज, इलाहाबाद

नर्सरी से कक्षा 8 तक

प्रबंधक श्री समीउद्दीन

प्रधानाचार्या कु0 शमीमा अख्तर

ज्ञान प्राप्त करने का एक मात्र संस्थान" फोन : 432063

सी0बी0एस0 पब्लिक जूनियर हाईस्कूल

राजरुपपुर, इलाहाबाद

(के0जी0 से कक्षा आठ तक)

अंग्रेजी माध्यम

प्रबन्धक यू0बी0सिंह, पूर्व अध्यापक, राजकीय इण्टर कॉलेज, इलाहाबाद

है। शिक्षा मात्र किताबी बन कर रह गई है। किताबी पन और व्यवहारिक जीवन में बहुत अन्तर है। वर्तमान की किताबी शिक्षा के दुष्परिणाम उजागर हो चुके है यह शिक्षा बेरोजगारी को बढ़ाती है जिसके फलस्वरुप ही समाज में आतंकवाद, भ्रष्टाचार आदि विकट समस्याओं का जन्म हुआ है। यह शिक्षा ऐसे नवजवान उत्पन्न करने में पूर्णतया असफल सिद्ध हो चुकी है जो समाज निर्माण में एक सशक्त कड़ी की भूमिका अदा कर सके। डा0वी0सी0 सुन्दर का इस शिक्षा के सन्दर्भ में मत है कि–"छात्रों के ऊपर इतने विषय और किताबों का बोझ लाद दिया गया है कि उसी को संभालने में उनके जीवन के अनेक बहुमूल्य क्षण नष्ट हो जाते है।"

कहना न होगा कि शिक्षा के ढॉचे और स्तर का उतना महत्व नही होगा जितना विद्यार्थी की आत्मनिर्भरता और आत्मिक ज्ञान का। इस प्रकार आज की शिक्षा का ढॉचा राष्ट्रीय स्तर पर एक होना चाहिए जिसके द्वारा भारतीय जन–जीवन को वैज्ञानिक चिन्तन से जोड़ना होगा। अर्थात 'स्कूल जाने वाले तमाम बच्चे यदि वे किसी भी कर्म क्षेत्र में उतरे उनका दृष्टि कोण वैज्ञानिक हो अतः विज्ञान की पढ़ाई की बच्चों के पाठ्यक्रम में पहली श्रेणी में लाना होगा।"

वर्तमान युग विज्ञान का युग है। तकनिकी ज्ञान अर्जन का युग है। केवल इतिहास, भूगोल और साहित्यिक विषयों के ज्ञान के आधार पर हम आगे नहीं बढ़ सकते। अन्य विकसित एवं विकासशील देशों के साथ विकास के मार्ग पर अग्रसर नहीं हो सकते है विद्युत ऊर्जा, परमाण सरंचना, रसायन, कृषि विज्ञान आदि ऐसे क्षेत्र है जिनके सम्बंध में आधुनिकतम टेक्नोलॉजी का प्रयोग कर अचम्भित कर देने वाले आविष्कार किये जा रहे है। अन्तरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में भारत प्रमुख भूमिका अदा कर रहा है। भाष्कर, रोहिणी, एपल, इनसेट जैसे अंतरिक्ष यान अन्तरिक्ष में भेजने का गौरव भारत को प्राप्त हो रहा है। यह सब तभी आगे भी सम्भव हो सकता है जब कि आरम्भ से ही विद्यार्थियों को विज्ञान की शिक्षा अनिवार्य रुप में दी जाती रहे। आज की शिक्षा में जिन मौलिक मूल्यों की प्रतिष्ठा की सर्वाधिक आवश्यकता है वे तीन कोटियों में विभक्त की जा सकती है–

1. आत्म निर्भरता और श्रम की महत्ता स्वीकार करने की भावना जागृत करना।

2. देश भक्ति व सामाजिक भावना जागृत करना।

3.भारत की सांस्कृतिक एकता और जीवन मूल्यों का समुचित ज्ञान।

कुल मिलाकर आज की शिक्षा में ऐसा आमुल–चूल परिर्वतन करना है जिसके द्वारा एक ओर शारीरिक श्रम की प्रतिष्ठा छात्रो के मानस पटल पर अंकित हो और दूसरी ओर उनके प्रत्यक्ष परिश्रम के कारण देश के नव निर्माण में सहायता प्राप्त हो।

इस प्रकार विद्यार्थी में योग्य कर्तव्य भावना अनुप्राणित करने के लिए हमारी शिक्षा प्रणाली ध्यानयोन्मुख होनी चाहिए। अन्त में यही कहना चाहुँगी कि शिक्षा का कार्य अनुभव और आत्मनिर्भरता की ओर मोड़ना चाहिए। शिक्षा का जो भी स्वरुप हो शिक्षा ऐसी हो जो मनुष्य के अन्दर गुण को विकसित कर सशक्त समाज का निर्माण कर सके जिससे कि हम अपने को एक सभ्य, सुशिक्षित तथा सुदृढ़ समाज एवं देश का हिस्सा होने में शर्म नहीं फक्र महसूस कर सके।

विगत 9 वर्षो से आपके क्षेत्र में

नगरिया पब्लिक स्कूल

चकइमाम अली, दूरवाणी नगर के पास, नैनी, इलाहाबाद

(अंग्रेजी माध्यम)

नर्सरी से कक्षा 5 तक

प्रवेश प्रारंभः 1 जुलाई से समयः प्रातः 8.00 से 12:00

/सी0बी0एस0ई0 पाठ्यक्रम पर आधारित /विद्यालय द्वारा वाहन की सुविधा

/विद्यालय द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक व प्रतियोगी /कार्यक्रमोंका आयोजन

/विद्यालय द्वारा वार्षिक शैक्षणिक पुरस्कार वितरण

/प्रवेश के समय दो बच्चों के एडमीशन पर विशेष छूट।

प्रधानाचार्या
गीता नगरिया

चित्रांश स्टूडियों ☎:616521

115ए/1ए, भावापुर, बेनीगंज, इलाहाबाद

हमारें यहॉ शादी के अवसर पर विडियोंग्राफी, फोटोग्राफी, लंहगा, गहना, मेकअप, मेंहदी, कार, स्टेज सजाने, मण्डप सजाने की सुविधा है।

प्रो0 सुधीर कुमार श्रीवास्तव

ईसाई पब्लिक स्कूलों की प्रासंगिकता

ज्ञानेन्द्र सिंह

भारत में प्रथम पब्लिक स्कूल शिमला में सन् 1850 ई0 में विशप काटन के नाम से खुला। इसके करीब 15 वर्ष पश्चात् दूसरा पब्लिक स्कूल राजकोट में खोला गया। इन स्कूलों को मिलने वाली सफलता के मुद्देनजर भारत में जगह–जगह ईसाई पब्लिक स्कूल खोले जाने लगे। आज स्थिति यह है कि हिन्दुस्तान में लगभग हर नगर तथा कस्बे में ईसाई पब्लिक स्कूल की मॉग दिन ब दिन बढ़ती ही जा रही है। आज जबकि शिक्षा का वातावरण उत्तरोत्तर शिथिल एवं अराजक होता जा रहा है, कालेजों को राजनीति का अखाड़ा बना लिया गया है। ऐसे में दूषित राजनीति से दूर शान्ति पूर्वक चलने वाले इन ईसाई पब्लिक स्कूलों का समर्थन महत्व है।

ये पब्लिक स्कूल समाज में बहुत ही लोकप्रिय है तथा बिना किसी सरकारी सहायता के तमाम प्रतिरोधों के बावजूद अपना विस्तार करते जा रहे है। वर्तमान में जिस तेजी से ईसाई पब्लिक स्कूलों की मॉग समाज में बढ़ती जा रही है उससे एक बात स्पष्ट है कि इन स्कूलों में कुछ तो ऐसा है जो इनके आकर्षण में दिनो–दिन बृद्धि हो रही है, क्योंकि केन्द्र सरकार द्वारा इन्हीं स्कूलों की तर्ज पर खोले गये नवोदय विद्यालयों उतने लोकप्रिय नहीं हो सके, जबकि नवोदय विद्यालयों के लिए सरकार अच्छा खासा धन उपलब्ध करा‍ती है। छात्रों को किसी प्रकार की फीस आदि भी नहीं देनी पड़ती। किताब कॉपी यहॉ तक कि भोजन कपड़े भी व्यवस्था भी सरकार की तरफ से की जाती है।

ईसाई पब्लिक स्कूलों में फीस के नाम पर काफी मोटी रकम ली जाती है तथा तमाम अन्य मसलों पर भी अभिभावकों का शोषण होता है, मसलन किताब–कॉपी, ड्रेस आदि किसी संस्थान विशेष से खरीदने के लिए बाध्य किया जाता है, जहॉ अभिभावक को दूना–तिगूना दाम देना पड़ता है, वाहन तथा विल्डिंग फण्ड के नाम पर भी खासा धन वसूल किया जाता है।

अगर लोग अपने बच्चों को इन्हीं पब्लिक स्कूलों में पढ़ाना पसन्द करते है तथा इसमें अपनी शान समझते हैं तो कारण स्पष्ट है कि इन पब्लिक स्कूलों में ही अपने बच्चों का भविष्य सुरक्षित नजर आता है जिसका महत्वपूर्ण कारण ईसाई पब्लिक स्कूलों में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी का होना है, क्योंकि अंग्रेजी भाषा पूरी दुनिया में बोली और समझी जाती है। अतः अंग्रेजी का महत्व स्वतः ही सिद्ध है। भारत में राष्ट्र भाषा एवं सम्पर्क भाषा हिन्दी होने के बावजूद अंग्रेजी सम्पर्क भाषा के रुप में प्रचलित है।

अंग्रेजी जानने वालों को समाज में सम्मान प्राप्त होता है, विभिन्न स्तर की प्रतियोगी परीक्षाओं में अंग्रेजी एक अनिवार्य विषय भी है, सत्य तो यह है कि अंग्रेजी का अच्छा जानकार ही प्रशासनिक पदों की कल्पना कर सकता है अन्य सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थानों में भी अंग्रेजी जानने वालों को ही वरीयता दी जाती है।

ये पब्लिक स्कूल अपने छात्रों को कड़े अनुशासन में रखते है तथा उन्हें प्राथमिक कक्षाओं से ही सामान्य ज्ञान का सम्यक अध्ययन कराते है। इस प्रकार इन ईसाई पब्लिक स्कूलों में छात्र अंग्रेजी और सामान्य ज्ञान की अच्छी जानकारी रखते है। स्कूल परिसर के बाहर का वातावरण हिन्दीमय होने के नाते इन्हें हिन्दी पढ़ने–लिखने, बोलने समझने में भी किसी प्रकार की कठिनाई नहीं होती, इस प्रकार इन पब्लिक स्कूलों से निकले छात्र किसी भी प्रतियोगी परीक्षा के लिए काफी हद तक तैयार होते है, जबकि अन्य विद्यालयों से निकले छात्रों को अंग्रेजी और सामान्य ज्ञान के लिए अतिरिक्त परिश्रम करना पड़ता है।

इन ईसाई पब्लिक स्कूलों में क्षमता से अधिक छात्रों का प्रवेश नहीं लिया जात जिससे शिक्षण कार्य सुगमता पूर्वक सम्पन्न होता है। यद्यपि ये पब्लिक स्कूल अपने शिक्षकों को पर्याप्त पारिश्रमिक देते है, तथापि उनसे पूरा काम भी लेते है। ये पब्लिक स्कूल जरुरत मंद छात्रों को आवास भी उपलब्ध कराते है, जहॉ उनकी उचित देखभाल की जाती है। एक विशेषता यह

सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त

जागृति कान्वेंट जूनियर हाई स्कूल

एच.डी. 61–62, ए.डी.ए. कालोनी, नैनी, इलाहाबाद

कक्षा : एल. केजी. से आठ तक

अंग्रेजी / हिन्दी माध्यम

प्रबंधक — श्रीमती रंजना पाण्डेय

प्रधानाचार्या — श्रीमती एस. भास्करन

है कि इन स्कूलों में पाठ्यक्रम अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में लिए जाते है, अर्थात् पाठ्यक्रमों को आधुनिकतम बनाए रखने का प्रयत्न किया जाता है।

इन पब्लिक स्कूलों में छात्र प्रौढ़ शिक्षा तथा अनौपचारिक शिक्षा विभाग द्वारा चलाये जा रहे साक्षरता अभियान में भी सहयोग करते हैं, जिससे इन छात्रो में सामाजिक भावना का विकास होता है, नियमित अध्ययन–अध्यापन भी इनकी एक विशेषता है जो हमें अन्य स्कूलों में देखने को नहीं मिलती।

ये पब्लिक स्कूल अपनी तमाम अच्छाईयों के पीछे कुछ दोष भी छिपाए हुए है। जिसके कारण बार–बार इन स्कूलों का विरोध किया जाता है। इन स्कूलों की सबसे अहम कमजोरी यह है कि ये राष्ट्रगान आदि भारतीयता का परिचायिका चीजों से परहेज करते है इससे जुड़ी कुछ घटनाएं सामने भी आयी है।

अभी पिछले साल मध्य प्रदेश के एक ईसाई पब्लिक स्कूल ने अपने तीन छात्रों को मात्र इसलिए स्कूल से निष्काषित कर दिया क्योंकि उन छात्रों ने नियमित होने वाली प्रार्थना के बाद जबरदस्ती राष्ट्रगान की गाने की कोशिश की थी। संाराश यह है कि इन पब्लिक स्कूलों में ईसाइयत तथा पाश्चात्य संस्कृति संस्कार बद्धमूल किये जाते है।

इन स्कूलों की दूसरी कमजोरी यह है कि ये स्कूल किसी चर्च समिति द्वारा ही नियन्त्रित होते है तथा ईसाई धर्म को विशेष रुप से रेंखाकित करते हैं। इन स्कूलों में अन्य धर्मो तथा रीति–रिवाजों का माखौल उड़ाने की घटनांए भी होती रहती है। बम्बई के एक ईसाई पब्लिक स्कूल ने एक छात्रा को हाथों पर मेंहदी लगाकर आने के कारण कठोर सजा दी तथा कुछ दिनों के लिए स्कूल से निलंबित भी किया गया।

इन स्कूलों का मुख्य नियन्त्रक सामान्यतः चर्च समिति का पदाधिकारी ही होता है। इन पर शासन और शिक्षा विभाग का कोई खास नियन्त्रण नहीं होता। जिससे ये काफी मनमानी भी किया करते है। भारतीय संविधान के अनुसार सभी को शिक्षा पाने का समान अधिकार होना चाहिए। परन्तु इन पब्लिक स्कूलों की फीस ज्यादा होने के कारण गरीब वर्ग के छात्र पहले ही छट जाते है। इस प्रकार इन पब्लिक स्कूलों में मात्र धनी वर्ग के छात्र ही अध्ययन कर पाते है। अतः ये पब्लिक स्कूल समाज में वर्ग भेद पैदा करते है।

इन पब्लिक स्कूलों के छात्र स्वयं को अन्य छात्रों से श्रेष्ठ समझते है जिससे उनमें अहंकार की भावना आ जाती है। जो उन्हें अन्दरुनी तोर पर खोखला करती है। ये पब्लिक स्कूल हिन्दी में बात करने पर छोटे–छोटे बालकों से भी अधिक जुर्माना लेते है जिससे बच्चों के कोमल मन में राष्ट्र भाषा हिन्दी विरोध की भावना उत्पन्न होती है। ये स्कूल प्रायः छात्रों को भारतीय संस्कृति का कम पाश्चात्य सभ्यता का अधिक महत्व समझाते हैं। जिससे ये छात्र भारतीय सभ्यता संस्कृति को हीनता की दृष्टि से देखते है तथा महापुरुषों का उपहास करते हैं। महात्मा गॉधी ने कहा था–"यदि किसी स्थिति में पहुँचकर एक पीढ़ी अपने पूर्वजों के प्रयासों से अनभिज्ञ हो जाती है तो वह समाप्त हो जाती है।" इस प्रकार ये पब्लिक स्कूल भारतीय संस्कृति के लिए खतरा बन सकते हैं क्योंकि ये स्कूल हमारी संस्कृति में पाश्चात्य सभ्यता का जहर घोल रहे है।

समाज में यह बात प्रचलित है कि पब्लिक स्कूल में छात्र बुद्धिमान तथा योग्य होते है। पर यह बात पूर्णतः सत्य नहीं है क्योंकि इन स्कूलों के छात्र भी मूर्ख और अयोग्य हो सकते है, चूंकि इन स्कूलों में चूने हुए छात्र बुद्धिमान हों तो भी यह कोई बहुत बड़ी उपलब्धि नहीं कही जायेगीं

हम इन स्कूलों को शासन तथा शिक्षा विभाग के अधीन कर इनमें दूषित राजनीति तथा भ्रष्टाचार फैलाने के हिमायती नहीं है पर कम से कम राष्ट्रभाषा एवं देश की संस्कृति से खिलवाड़ की अनुमति देने के पक्ष धर भी नहीं है।

अगर ये ईसाई पब्लिक स्कूल सर्वोत्तम शिक्षा देने के साथ–साथ छात्रों में देश तथा संस्कृति के प्रति प्रेम की भावना भी भरें तो उनकी सार्थकता निर्विवाद हो जाए।

फोन न0 निवास– 23318 दुकान–23156
आलोक एजुकेशनल स्टोर्स, एवं दूरसंचार केन्द्र
हास्पिटल रोड (निकट–सेट्रल बैंक), भलुअनी, देवरिया
हमारे यहां सभी प्रकार की पत्र–पत्रिकायें उचित मूल्य पर प्राप्त करें।
प्रोपराईटर
सुरेश कुमार पाण्डेय

जय मॉ शारदा संगीत ड्रामा पार्टी एवं बैण्ड पार्टी
भैदवा चौराहा, देवरिया, उ0प्र0
नोट : किसी भी अवसर पर हमें एक मौका अवश्य दे।

'बेचारी'

ईश्वर शरण शुक्ल

छूटी नहीं थी हथेली,
की मेंहदी,
उतरी नहीं थी
सितारो की बेछीं
अधरो की लाली,
न धूमिल हुई थी
न ही वह किसी पल
हिल–मिल हुई थी,
अचानक सदा के लिए,
चल बसी वह
बताया गया, हो गया 'कालरा' था
मगर धन दहेजों का,
ही माजरा था।
जला दी गयी
तेल, टायर, सहारे
तड़पते रहे माँ–पिताजी बेचारे।
खबरों में संदिग्ध हो गयी
किसी की बहु व
किसी की 'दुलारी'
गयी दहेज खातिर
मारी एक नारी
नही है वह सुरक्षित
नारी–बेचारी।।

गज़ल

☞ बुद्धिसेन शर्मा

क्या जरुरी है कि हो त्योहार की हर रोशनी,
आग लनगे से भी हो जाती है अकसर रोशनी।
खिड़कियों को बंद रखने का मज़ा हम पा गये,
दे के दस्तक फिर गयी बाहर–की–बाहर रोशनी।
शर्त ये है, सौंप दें हम अपनी [1]बीनाई उन्हें,
फिर तो वह देते रहेंगें ज़िंदगी भर रोशनी।
रास्ता तो एक ही था, ये किधर से आ गये,
बिछ गयी क्यों इनके नीचे बनके चादर रोशनी।
सुबह आ जाता हूँ जैसे [2]अज़दहे के पेट में,
रात होती है तो होती है मयस्सर रोशनी।
अपनी साज़िश में हवाएँ हो गयीं फिर कामयाब,
रह गयी फिर बादलों के बीच फँस कर रोशनी।
खुद चमकते हैं हमेशा रात की पाकर पनाह,
ये सितारे क्या भला बाँटेंगे घर–घर रोशनी।
यूँ सवा नेज़े पे सूरज तो कभी पहले न था,
थी, मगर पहले न थी इतनी भयंकर रोशनी।
हम दिलों से दिल मिलाते हैं, निगाहों से निगाह,
रोशनी से कर रहे हैं हम उजागर रोशनी।

1– दृष्टि 2– अजगर

इण्डियन पब्लिक स्कूल

प्रीतम नगर, (निकट विवेकानन्द चौराहा)
इलाहाबाद

नर्सरी से कक्षा 12 तक कला एवं विज्ञानवर्ग

नर्सरी में अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम दोनों की सुविधा

निःशुल्क कम्प्यूटर की व्यवस्था

प्रबन्धक
श्री पुष्पराज सिंह

सहयोगकांक्षी — श्री आर.बी. सिंह
प्रधानाचार्य — श्री पवन द्विवेदी

मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है। मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है

विगत पॉच वर्षो से समाज सेवा के लिए पूर्णतः समर्पित

जी.पी0एफ0सोसायटी

एफ.सी.एल.सी. नितीन काम्पलेक्स, मेवालाल की बगिया, नैनी, इलाहाबाद

आपसे विभिन्न स्थानों पर संचालित

0अंध विद्यालय 0विकलांग केन्द्र 0शिक्षा केन्द्र के लिए

आर्थिक/समाजिक/शारीरिक/कपड़े या अन्य सामग्री की सहयोग की अपील करता है।

प्रस्तावित अनाथालय व बृद्धआश्रम :

ग्राम –टीकर, पोस्ट–टीकर, (पैना) जिला –देवरिया

☎:616521

चित्रांश टाइप इन्स्टीट्यूट

115ए/1ए, भावापुर, बेनीगंज, इलाहाबाद

हमारें यहॉ अच्छे टीचर द्वारा हिन्दी–अंग्रेजी टाइप तथा हिन्दी–अंग्रेजी शार्टहैन्ड सीखाये जाते है।

परीक्षक

अजय शंकर पाण्डेय
प्रेस एवं प्रकाशन विभाग
महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ,वाराणसी

चश्मा सुशोभित नैन वाले बार–बार प्रणाम हो,
इसलाम वाले हो अगर तो बार–बार स़लाम हो,
पर्चा बिगड़ना और बनना आपके ही हॉथ है
मेरा भविष्य बॅधा हुआ अब आपके ही साथ है।
हैं आप पर्दे में बहुत खोजा न पाया कुछ पता
मैं डाकखाने रेलवे में भी बहुत था ताकता
अब आपकी स्त्रोत्र द्वारा वंदना हूँ कर रहा
मैं क्या सभी जग जानता है आपकी महिमा महा।
हम छात्र बंदे और तुम उनके लिए अल्लाह हो
विद्यार्थियों की जीर्ण नौका के लिए मल्लाह हो
लग जाय डांडा लेखनी का और बेड़ा पार हो
गम्भीर चाहे मूर्खता का अमित पारावार हो।
जब लाल रंग वाली कलम को बैठते हैं आप ले
जो कापियों पर दौड़ती जिस भॉति कुन्ते बावले
विद्यार्थी समुदाय का कटता गला इस भॅाति है
मानों यहॉ पर आ गई फिर फ्रंस वाली क्रांति है।
जब तक न हों हम पास जीवन का सहारा कुछ नहीं
कोई नहीं है पूछंता जग में हमारा कुछ नहीं
है ब्याह को भी पूॅछते सब लोग तुम क्या पास हो
कोई नहीं है पूॅछता द्विज हो कि तुम रैदास हो।
सरकार देशी या विदेशी हो यही है चाहती
कोई सनद हो पास में तब योग्य है वह मानती
हैं पास करना फेल करना खेला सारा आपका
आशीष पहॅुचे आपको सब छात्रों के बाप का।
हे–हे परीक्षक आपकी हो जाय थोड़ी सी दया
समझूं हमारे बाप ने निज बाप की, की है गया,
इच्छुक नहीं धन–धाम का, इच्छुक नहीं हूँ स्वर्ग का
मैं पस होऊँ लक्ष्य है, इच्छुक नहीं अपवर्ग का।
हे भाग्य निर्माात डिवीजन के प्रदाता हे प्रभो,
हे प्रणय–बंधन के विधाता छात्र–त्राता हे विभो,
घूमे कलम श्रीमान की छप जाय मेरा नाम भी
गुण आपके सौ पुस्त का गाऊँ सबेरे–शाम भी।
कुछ मौज, कुछ हड़ताल में ही सारा था कटा,
कुछ `फिल्म भी थे आगये जिससे न पाठों को रटा,
पुस्तक कभी जब खोलता, ऑखें न उनको बाँचती
बस तारिकाएँ फिल्म को ही पेज़ पर थी नाचती।
जो मास्टर ने नोट करवाये उन्हें मैंने रटा
इम्पार्टेन्ट लिखा दिये थे मैं रहा उन पर डटा
`गेस पेपरो का रात भर मैंने महान मनन किया
थी आपने करुणा नहीं उनको न पेपर में दिया
दिन रात मैंने देवताओं को बड़े मन से भजा
तड़के सदा दर्शन किया फिर बंदगी लायी ब़जा
ऐसा न कीजे भक्ति मेरी झूठ हो जाये सभी
ऐसा न हो भगवान पर से उठ चले विश्वास भी
हूँ साठ–सत्तर नम्बर मॅागता भगवन् नहीं,
मिल जाय छत्तीस मार्क आगे देख लॅूगा फिर कभी
युग आज जनता का उन्हीं के साथ रहना चाहिए
सरिता डिवीजन थर्ड में ही आज बहना चाहिए।
है डालडा से यह बनी कोमल कली सी हड्डियॉ
इससे न थी मजनॅू महोदय की मुलायम पसलियॉ
मत दीजिए अवसर की पहिया रेल का इस पर चले
ऐसा न हो पाकस्थली में मीन के यह जा गले।
श्रीमान परीक्षक जी सुनिये इस वर्ष हमारी शादी है
जो फेल किया तो सचमुच ही उस लड़की की बरबादी है।
जो आप पास कर देवेंगे, फल कन्यादान तुम्हारा है।
बस छिपे रुप से पुण्य करों यह गुप्तदान भी न्याराहै।

डाली ऑवला लड्डू ऑवला मुरब्बा
निर्माता:डाली फ्रुट प्रोडक्ट्स
बिक्री केन्द्र (जौनपुर): मुहल्ला–सिपाह, जौनपुर फोन न0 :68897

फोनः 654717
कृष्णा इलेक्ट्रिकल्स
10, अखाड़ा मानखान, अतरसुईया, इलाहाबाद
बिजली के समानों के विक्रेता व सुधारक
नोट:1.शादी विवाह में लाईट की सजावट के लिए पधारें। 2. हमारें यहॉ कुशल कारिगरों द्वारा मकान की वायरिंग मॉनोब्लाक, जेट, समर सेबिल की मरम्मत की जाती है।

दिल का पैगाम–2

तीसरी किस्त

पिछले अंक में आपने पढ़ा–

अनिल व सावन बहुत ही घनिष्ठ मित्र है। अनिल को दोस्ती साथ पढ़ने वाली,लड़की अनु से होती है, जो धीरे–धीरे प्यार का रुप ले लेती है। इस बात की खबर केवल सावन को रहती है।

परीक्षा समाप्त होने के अनिल और अनु एक दूसरे नहीं मिल पाते है। नहीं उन्हें एक दूसरे का पता मालूम होता है।

सावन अनु के घर का पता लगाने निकलता है और अनु की सहेली शालू से उसकी मुलाकात हो जाती है। सावन की बातों से शालू प्रभावित होती है और अनु के घर का पता बता देती है।

अनिल, सावन के साथ अपनी चचेरी बहन डॉ0 रेखा के पास जी0के0पुरम् जाता है। वहॉ का माहौल बहुत जल्द ही बदल जाता है। अनिल के दिल का पता ढ़ढने गया सावन खूद ही अपने दिल का पता भूल जाता है। वह भी पहली नजर में।

अनिल और सावन बाजार जाते हैं। रास्तू में अनिल कहता है–"चलते है यार, अनुराधा की तरफ"

"नहीं यार, अनु की तरफ जाने का मतलब है कम से कम तीन–चार घंटे का समय और हम लोग रेखा दीदी से तुरंत आने को कह आये है, वे घबरा जायेंगी कि आखिर हम कहॉ गए? हम बाद में चलेगे?"

अनिल कुछ मसाले लेता है और कहता है–"चलों यार, तुम्हें कुछ चाय–नाश्ता करवा दूँ। तुम तो मसाला लोगों नहीं।"

"छोड़ो भी यार, वैसे भी हम लोगों को निकले लगभग एक घंटा हो चुका हैं। दीदी सोचेंगी कि फालतू घूम रहे है और काहे एक दो दिन में इज्जत गॅवायी जॉए?"

सावन के दिल में तो मोना की खलबली मची हुई थी, उसे बाहर कैसे अच्छा लगता। वे दोनों घर पहुॅचते है, तो वास्तव में डॉ0 रेखा उनका इन्तजार कर रही होती है।

डा0 रेखा–कहॉ, इतनी देर रुक गये?

सावन–सॉरी दीदी, मैं इससे कह रहा था लेकिन ....?

बबली– (मजा लेने के उद्‌देश्य से) "इध् ार कितनी बेसब्री से इंतजार हो रहा है, दिल के अन्दर खलबली मची हुई है। (मोना की ओर ईशारा करते हुए) और आप लोग मटरगस्ती कर रहे हैं। कम से कम इतना तो ध्यान रखते कि यहॉ कोई और भी आया है। और फिर अनिल भइया आप तो दुबारा मिलेगें भी, मगर सावन भइया पता नहीं कब मिलें। कम से कम उनसे तो बातें कर लेने दो। वैसे हैं बड़े ही काम के आदमी। (सभी हॅसने लगते है। लंच के लिए सभी की आम सहमति से जमीन पर बैठने का निर्णय लेते है। पश्चिम दिशा को छोड़कर अन्या सभी दिशाओं में बैठने का निर्णय कर सभी यथास्थान बैठते हैं। आमने–सामने सावन, अनिल और मोना, बबली तथा एक तरफ दोनों औरतें और डॉ0 रेखा। मोहन, भोजन की सभी व्यवस्था देखता है। सावन और मोना दोनों चश्माधारी भोजन कम करते, एक दूसरे को चोर निगाहों से अधिक देखते।

0अनिल उसके कान में कहता है–"कसबे क्या लफड़ा है, कहीं कुछ गड़बड़ तो नहीं।"

सावनः–"हाल क्या है दिलोंका न पूछो सनम, आज किसी ने मेरे दिल पर गजब ढा दिया।

पहले मोना और फिर उसके पीछे सावन हाथ धोने के लिए वाश वेसिन पर गये। मोना चुपचाप हाथ धोती है और सावन उसे एकटक देखे जा रहा था। जब मोना ने सिर ऊपर उठाया तो वह सावन को देखकर झेंप जाती है और अचानक सावन बोल पड़ा–

"तुमसा कोई प्यारा, कोई मासूम नहीं है,
क्या चीज हो तुम, जानम मुझे मालूम नहीं है।"

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी "नैना"
एम.ए., एम0सी0ए0,
प्रकाशित रचनाएं– हिन्दी दैनिक "आज", न्यायधीश, प्रयागराज टाईम्स, अमर उजाला, मासिक पत्रिका "विश्व एकता संदेश, गुड़िया, लोकध्वनि, कम्पटीशन रिफ्रेसर, विज्ञान प्रगति आदि।
आकाशवाड़ी के युवा मंच से जुड़ाव
सम्पर्क सूत्रः नितिन काम्पलेक्स, मेवालाल की बगिया, नैनी, इलाहाबाद

शिव शक्ति गैस सर्विस एवं इलेक्ट्रीकल्स सेन्टर
भैदवा चौराहा, देवरिया

सभी लोग लंच कर चुके होते हैं मगर सावन, अनिल, मोंना, और बबली बहुत ही थोडा सा ही खा पाये होते हैं। विशेषकर सावन और मोना।

बबलीः—(औरतों से) ''आप लोग लंच कर चुकी हैं, तो ऐसा है कि आप लोग बुढ्ढी हैं आप लोग जाइए। हम लोग अभी आराम से खायेंगें, तब तक आप लोग और खाना पकाइए।''

(सभी लोग हॅस पडते हैं।)

अनिलः—''आप लोग संकोच मत करिये। यह घोंचू अभी आराम से खाएगा।''

बबलीः—देखो अनिल भइया, अगर आपने सावन भइया को कुछ भी कहा तो हमसे आपकी कुट्टी हो जाएगी। वो कम बोलते हैं तो आप उनका मजाक उडाते हैं। आप अगर लंच कर चुके हैं तो शौक से जाइये। सावन भइया, आप घबराइये नहीं मोना तो पूर्ण रूपेण आपका साथ देगी और मैं भी अंत तक आप दोनों के साथ हूॅं।''

अनिलः—(चिढाने के लिए) ''बबली तुम जानती नहीं हो इसे, यह बहुत ही वैसा है।''

बबलीः— सावन भइया, प्लीज आप इन्हें मना कीजिए, वरना........।''

मोना को सावन की तरफ एकटक देखते देख अनिल उसके कान में कहता है—''कसबे क्या लफड़ा है, कहीं कुछ गड़बड़ तो नहीं।''

सावनः—''हाल क्या है दिलों का न पूछो सनम, आज किसी ने मेरे दिल पर गजब ढा दिया।

सावन की आवाज भावावेश में थोड़ी तेज बह निकली। इसलिए मोना और बबली ने भी सुन लिया।। मोना शर्म से लाल—लाल हो गयी। जो कयामत के चरमोत्कर्ष पर लुभावनी थी।

बबलीः—''वाह भइया, क्या गाने के बोल बोले?''

अनिल अब भी मजाक ही समझ रहा था, क्योंकि सावन की सुन्दरता, व्यवहार कुशलता पर बहुत सी, एक से बढ़कर एक सुन्दर, स्मार्ट, गुणवान लड़कियॉ मरती थीं। मगर सावन पत्थर—दिल बना रहता। सावन की जुबान पर तो वैसे ही हरपल शायरी और गाने के बोल रक्खे रहते। हर बात पर शायरी और गाना बोल पड़ता। इसी कारण अनिल ने इसे मजाक ही समझा।

पहले मोना और फिर उसके पीछे सावन हाथ धोने के लिए वाश वेसिन पर गये। मोना चुपचाप हाथ धोती है और सावन उसे एकटक देखे जा रहा था। जब मोना ने सिर ऊपर उठाया तो वह सावन को देखकर झेंप जाती है और अचानक सावन बोल पड़ा—

"तुमसा कोई प्यारा, कोई मासूम नहीं है, क्या चीज हो तुम, जानम मुझे मालूम नहीं है।"

इस पर मोना ऐसे शरमायी जैसे कोई कली सूरज की पहली बेला से आच्छादित होकर खिल उठी हो। वे दोनों ऐसे लग रहे थे जैसे बंसत ऋतु के एकांत बगीचे में तोता और मैना एक दूसरे को प्यार भरी नजरों से देख रहे हों।

मोना— आऽऽ......आऽऽ........आईऽऽ...लऽऽ. ..लऽऽ लव...यू सावन।

यह कहते हुए सावन के ओठों पर वह अपने शहद के समान मीठे, गुलाब की पंखुडियों से नाजुक ओठों को रख देती है। वे इसी तोता और मोना के प्यार से भरे चारा बॉटने रुपी रमणिक परिदृश्य में कई मिनटों तक बने रहे।

वे दोनों चुप थे, ओंठ चार से दो हो गये थे लेकिन निंगाहे सब कुछ बयॉ कर रही थी। वे दोनों इस गुप्त भाषा को समझ सकते थे पर किसी दूसरे को समझाना टेढ़ी—खीर साबित होगा। यह उनके भविष्य में एक होने का पहला सबूत था।

"नाजुकी उसके लबों की क्या कहिए,
पंखुडी एक गुलाब की सी है।"

बबली— मोना; मोना। हाथ धुल गया भइया। मोना शर्माकर अन्दर चली जाती है, थोड़ी देर बाद सावन भी जाता है तो बबली कहती है—"एक बात कहूॅ भइया, पहले आप गुस्सा थूक दीजिए। फिर मैं कहूॅगी, वरना........।

अनिल—बोलो भी, लेकिन फालतू बात

जय माता दी
खाद भण्डार एवं पी0सी0ओ0 सेन्टर
भैदवा चौराहा, देवरिया   प्रो0 संतोष कुमार तिवारी

नहीं बोलने का। क्या समझी......।
बबली—सावन भइया और मोना की जोड़ी खूब जमेगी। काश मोना और सावन भइया की शादी हो जाती तो मैं खूब डांस करती। सावन, मन में लड्डू फूटते हुए भी, अपनी शराफत दिखाने के लिए बोला—
"देखो; बबली..............।
(बात काटते हुए) ''मैं आप लोगों से आश्वासन ले चुकी हूँ। खैर सॉरी। सावन भइया, कुछ चुटकुले सुनाइए ना, प्लीज। आप तो बड़े ही बेकार इंसान है। कुछ कहते हीं नहीं। कुछ तो अपनी कला का नमूना दिखाइए।'
बबली का प्यार से परिपूर्ण आग्रह और विशेषकर मोना की निगाहों की भाषा, ओठों की फड़फड़ाहट जो बबली की बातों से सहमति की हामी भर रहे थे। सावन दिमाग से तो नहीं पर अपने दिल से बाध्य सा हो गया और बोला—
''भई, मुझे तो चुटकुला आता नहीं, खैर तुम्हारी बात है बबली तो मैं एक दो सुना देता हूँ।
1. एक लड़की ने एक लड़के से कहा—शादी के लिए लड़की का हाथ ही क्यों मॉगा जाता है, पैर क्यों नहीं?
लड़का—सीधी सी बात है। हाथों में तो घड़ी, कंगन, अंगुठी आदि होती है, मगर पैरों में सिर्फ चप्पल, सैंडिल या जूती होती है।
2.दरोगा(मुल्जिम से)—तुम अपनी पत्नी को छोड़कर आए हुए हो, यानी भगोड़े हो।
मुल्जिम—नहीं हुजूर, यदि आपने मेरी पत्नी को देखा होता तो आप मुझे शरणार्थी कहते है।
सावन दो चुटकुला सुनाकर चुप हो जाता ह तो मोना कहती है—
"प्लीज एक दो और सुनाइए ना। बहुत अच्छा कलेक्शन है चुटकुलों का।"

चूँकि मोना का अपने हॅसीन लब्जों से सावन को सम्बोधित यह पहला लब्ज और आग्रह था इसलिए सावन पलभर की भी देर किये बिना आगे शुरु कर देता है—
1.पति—(घर पहुॅचने पर अपनी पत्नी से) 'वीडियों पर कौन सी फिल्म देख रही हो?'
पत्नी—अगर तुम न होते।
अनिल—वेरी गुड सावन।
2. एक दोस्त अपने दोस्त से कहता है—ये तुम्हारे सिर पर चोट कैसे लगी?
दूसरा दोस्त— प्रेमिका के लव लेटर से।
पहला दोस्त— अरे यार, पत्र तो बहुत ही हल्का होता है।
दूसरा दोस्त— बात दरअसल ये है कि जब मैं अपनी प्रेमिका के घर के पास से जा रहा था तो उसने लव लेटर को फूलदान के अन्दर डालकर मेरे ऊपर फेंका था।
बबली— वाह, सावन भइया। प्रेमिका की याद आपको भी आने लगीं।
तभी डा0 रेखा आती है और सावन तथा अनिल को कहती हैं—
"सावन तुम और अनिल गाड़ी लेकर थोड़ा हास्पिटल चले जाओं और वहॉ मेरी छूट्टी के लिए लीव एप्लीकेशन दे देना और कम्पाउन्डर संजू को लेकर मार्केट से वी. सी.आर. और अपनी पंसद के एक दो नये और एक दो पुराने कैसेट लेते आना। आज बैठकर फिल्म की देखेंगें। जितना मजा, इनज्वॉय करना हो, कर लो, पता नहीं कब दुबारा सभी लोग एकत्र होगे। बहुत ही भाग्य से सेम एंड फ्रेश माइन्डेड लोग मिलते है। क्यों सावन, हवाट इज ओर माइन्ड।
सावन—यू आर राइट दीदी। कितना हूँ तो आपका निर्णय है और आपका निर्णय सर ऑखों पर।

रेत बनाम लड़कियॉ

✍नूतन ''लता''

रेत बनती जिन पत्थरों से,
क्या पास उनके रह पातीं।
मान होने से पहले अस्तित्व का
छोड निज देश दूर उड जाती।।
कर देतीं स्वयं को समर्पित,
तीव्रगामी, अल्हड़ हवाओं के।
जो मिटा देती सागर में डुबोकर,
या कभी एकत्रकर टीले बनाती।।
याद आती भी हो तो क्या,
उनकी,
जन्म लिया जिन पाषाण खण्डों से।
नहीं मारूत चाहता जब तक,
देश अपनों का नहीं देख पातीं।।
कब तक सहें वो बन्धनों को,
एक दिन तो ऐसा आयेगा ही।
आसमान होगा उनकी मुट्ठी में,

सावन और अनिल मार्केट जाते है तथा कैसेट और वी.सी.आर. लेकर आते है। सभी बैठकर सायं 4 बजे से 11 बजे रात्रि तक फिल्म ही देखते है। बीच—बीच में कुछ खाद्य सामग्रियों का दौर चलता रहता है। अन्य लोग फिल्म देखने में मस्त है, तो सावन और मोना नैना फाइटिंग में। उन्हें तो फिल्म चलते हुए भी एकात बन लगा रहा होता है। **क्रमशः............**

UNITEC
Computer Education
Training - CIC, BCA, MCA, DCA, E.Com, Internet etc.
Job Work :Typing, Composing, Designing and lazer Printing & Cyber-Cafe
Add : Rajroopur, (Near Police Booth) Kalindipuram, Allahabad,
e-mail: sppal2001@yahoo.co.in

परिव्राजक संत की डायरी से

स्वामी नीलमणि दास

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि जमुनापार तरहार का क्षेत्र बढ़ गया। सांसद की हैसियत से तीनों तहसील समाहित हो उठी। बारा नवीन तहसील यहां के राजतन्त्र की रक्षा करने वाली, कसौटा बारा राज्य, बघेल वंश और 365 गांव के रींवा राज्य के कमलाकर सिंह की करनी से उरिण है।

शंकर गढ़ ब्लाक बना और अतीत में वहां के भारत सिंह सेसन जज रहे। उनके पुत्र ने भारत नगर बसाया तथा देव के रूप में छा गए, इस प्रकार उस वंशावली के साथ वह दान, मान, सम्मान के लिए विख्यात हैं। उनकी अमर कीर्ति 1954 में रजिसर्टड संस्था उदयन को प्रदान की गई। उन्होने जिला धीश जे0एन0 उग्र के समक्ष परगना धीश सिद्धू सिंह के सापने बसहरा तरहरा के विशाल जिले को सामाजिक, धार्मिक केन्द्र के लिए प्रदान किया। उनका अंतिम वाक्य था कि सब कुछ जाने के बाद मानव का मोह पास भंग हो जाता है। जमीदारी, प्रतिष्ठा तो गई किन्तु इन्ही सामाजिक कार्यो से लोग हमें याद करेंगे। 365 गांव के जमींदार होते हुए भी कभी किसी का अहित नहीं किया, उनका, दशहरा, पूजन, दंगल, तरहार, और उपरहार का अपूर्व मिलन हुआ करता था। शंकर गढ़ का रसगुल्ला प्रसिद्ध था, कोठियां, खदानें चप्पा चप्पा पूर्वजों की गाथा संजोए हुए उनकी कीर्ति गान को प्रकट कर रही है। चित्र कूट से मिला हुआ शिवराज पुर आज एक पुण्य स्थली बन चुका है। मुझे जान कर हर्ष है कि लोक ध्वनि का यह अंक शंकर गढ़ के विशेषांक रूप से प्रकाशित हो रहा है। इस हेतु मैं परिव्राजक संत के रूप में कोटिशः धन्यवाद देते हुए, वृद्ध पत्रकार की हैसियत से शुभकामनाए प्रेषित करता हुआ, स्नेहाशीष दे रहा हूँ। इस क्षेत्र के इन्दिरा पुरस्कार`स पुरस्कृत ठा0 श्री नाथ सिंह (मानपुर) जिनका स्थान आलोचनात्मक पत्रिका तक ही नहीं था बल्कि वे उपन्यास कार, प्रसिद्ध आलोचक, मनीषि विद्वान भी थे, मै उन को प्रणाम करता हूँ, सम्पादक डा0 उपाध्याय जो मेरे साथ नवाड्क, न्यायाधीश में रहे को कोटिशः धन्यवाद के पात्र है। इस पत्रिका का सम्पादकीय सम्हालने वाले इस समूचे जमुना पार के पत्रकारिता जगत के मोती हैं।

बारा अकबर इलाहाबादी जैसे महान शायर की जन्मस्थली है। अकबर साहब सेसन जज थे, ऐसे विभूति को शतशत् नमन है। सांसद डा0 जोशी के सारे कार्य आप अपने विस्फारित नेत्रो से शंकर गढ़, जसरा ब्लाक में देख सकते हैं।

कुशल अध्यापन से लेकर आद्यतन जिनका सक्रिय सहयोग जिर्माणायतन ही रहा। पत्रकारिता का प्रथम केन्द्र इलाहाबाद ही रहा, लीडर भारत के सम्पादक सी0वाई0 चिन्तामणि थे, जिनकी लेखनी का लोहा, अंग्रेज अफसर मानते थे। मालवीय जी मार्तण्ड अखबार के माध्यम से यहां की गरिमा बढ़ा रहे थे। सभी विभूतियों को मेरा कोटिशः नमन। बहुत बहुत धन्यवाद ❐

'मधु संचय' के कुछ अंश

संग्रहकर्ताःजे0पी0 शुक्ल

1. जो अज्ञान–अन्धकार से निकालकर ज्ञान प्रकाश की ओर ले जाये वही गुरु है।
2. जिसके द्वारा जड़–चेतन के भिन्नत्व एवं आत्मतत्व की असंगता का बोध हो, वह सदगुरु है।
3. प्रेमपूर्वक पूरा जीवन निर्भीकता एवं उत्साहपूर्वक जिया जा सकता है किन्तु मोह में,भय,क्लान्ति तथा तृष्णा है। प्रेम आत्मपरक एवं मोह पदार्थपरक है।
4. मनुष्यों के हृदय में जो लोककल्याण के भाव होते हैं वे मानवता के नाम से पुकारे जाते है।
5. वे माता पिता स्वयं अपने बच्चों के शत्रु है जो बच्चों को विद्या नहीं पढ़ाते।
6. प्रतिभा का उद्घाटन कोरी विद्वता, निर्मोहता, सद्गुण, सदाचार एवं निर्विषय स्थिति की सम्पन्नता से होता है।
7. शारीरिक शक्ति, स्वास्थ्य एवं विकास के लिए जिस पद्धति से अभ्यास किया जाता है उसे हठ योग कहते है।
8. दूसरों के दोषों पर हर समय दृष्टि रखना अपने हृदय की बहुत बड़ी कमजोरी है और स्वयं ही बहुत बड़ा दोषी होना है।
9. वर्तमान समय मनुष्य की अमोल धरोहर है। उसका सदुपयोग स्वर्ग और दुरुपयोग नर्क है।
10. मनुष्य का चरित्रहीन होना ही उसके लिए सबसे बड़ा अभिशाप है और सच्चरित्रता ही वरदान है।
11. विवेकवान स्वरुपस्थ का सर्वाधिक महत्वपूर्ण आनन्द प्रद सुखद क्षण मृत्यु वाला ही है। क्योंकि उसके बाद शारीरिक जीवन धारण करने का क्रम नष्ट हो जाता है।

यमुनापार के कवि

गीत

डॉ0 सन्त कुमार

एक माटी का घर आग पानी हवा
जिन्दगी को भला और क्या चाहिए
यह धरा का बिछौना गगन ओढना
फूल औ शूल जैसे सहारे तो हैं
ये अमा पूर्णिमा रात भी प्रात भी
सूर्य भी चॉदनी चॉद तारे तो हैं
लूटना है तो जी भरके लूटो रतन
अब किसी को भला और क्या चाहिए
राम ने जो दिया वह सभी तो मिला
पर हमारी व्यवस्था का यह सिलसिला
एक सुख की ही कुटिया नहीं है मगर
दर्द सुख का महल है कई मंजिला
भूख और प्यास बॉधे सफर के सिवा
आदमी को भला और क्या चाहिए
आदमी खुद ही कौडी का अब तीन है
आज सॉपों को डसने लगी बीन है
गीत को व्यर्थ अर्थी दिये जा रहा
इन मशीनों के आगे तो सब हीन है
पत्थरों के नगर चिमनियों का धुँआ
इस सदी को भला और क्या चाहिए

आवश्यकता है

मासिक पत्रिका **विश्व स्नेह समाज** हेतु उत्तर प्रदेश के विभिन्न शहरों में
0 संपादक
0 संवाददाता
0 विज्ञापन प्रतिनिधि
0 विज्ञापन एजेंट 0 ब्युरो
हमें लिखें या सम्पर्क करें: शाखा कार्यालय या सम्पादकीय कार्यालय।

गीत

डॉ0 राजकुमारी 'रश्मि'

झूमती होगी निमियॉ की डाली घनी
आज झूला पडा होगा फिर गॉव में
याद आने लगीं आज सखियॉ सभी
शाम से हैं ये रह–रह नयन भर रहे
आ रही सुध है छोटे बडों की सभी
याद वे भी हैं शायद मुझे कर रहे
टीस दिल में है कुछ, कुछ खुशी भी तो है
खुद खनकते हैं घुंघरू मेरे पॉव में
खेत तालाब भी हैं बगीचे वही
और हरियालियों के गलीचे वही
फूल गुडहल कनेरों के खिलते सुबह
कोई फिर आज तस्वीर खींचे वही
प्रीत बेला की लतिका सयानी हुई
खो गया मन है खुशबू भरी ठॉव में
एक इन्सान था पूज्य सबका हुआ
गॉव भर का पिता वह पुजारी रहा
एक गिरहस्थ भी था छिपा सन्त था
पर नहीं गेरूआवस्त्र धारी रहा
सबके दुख में दुखी और सुख में सुखी
थे उसी के ही सब प्यार की छॉव में

ooo

हाय–हाय मिर्ची

अरे,राजू! क्या हाल–चाल है।
इस बार किस लड़की को पटा रहे हो?
कोई लड़की अब फस ही नहीं रही है?
क्यों?
सभी लड़किया अब मेरे प्यार करके छोड़ने की आदत से परिचित हो गई है।

कहानी

अपंगता बोझ नहीं

✍ दर्दे दिल राज

गंताग से आगे

संध्या जी आप को इस गरीब अविनाश का नमस्कार।

संध्या जी मैं आप का सिर्फ इतना ही बताना चाहता हॅं कि मैं एक मामूली सा फोटोग्राफर हुं और आप को आज दो सालों से अपने कैमरे या फिर विडियों कैसेट में कैद करता आ रहा हुं। आप का ऐसा कोई भी स्टेज शो नहीं होगा जिसकों की मैने वीडियों फिल्म में कैद न किया हो। पर अब तलक आप के सामने आने की हिम्मत नहीं हुई। और आज भी आप के सामने आने की हिम्मत नही हो रही है कि कहीं आप नाराज न हो जाए। बस इसलिए खत के सहारे मैं आप से कुछ कहना चाहता हुं। संध्या जी मैने जब पहली बार आप का प्रोग्राम स्टेज पर देखा तो मुझे विश्वास हीं नहीं हुआ की आप नकली पांव होने के बावजूद इतना अच्छा नृत्य कर सकती है। वाकई संध्या जी आप कला की देवी है बहुत ही अच्छी अदाकारा है। आपसे संध्या जी मै दिल हीं दिल में बेपनाह मुहब्बत करने लगा हुं और कई बार मैने आप को ये बात बताना भी चाहा पर मेरी गरीबी ने मुझकों रोक दिया। संध्या जी अगर आपकी नजरों में मैं गरीब हुं तों मैं आपकी कसम खाकर कहता हूँ की आप की खातिर मै दुनियां की हर बेशुमार दौत की बरसात कर दूँगा और ऐसा न कर पाया तो सारी जिन्दगी आप को अपना चेहरा नहीं दिखाउगा। संध्या जी अगर आपको मेरी ये बातें बूरी लगी हो तो मुझे माफ कर देना। मैं आप की याद में जी लूँगा। क्योंकि मैं आपसे सच्चा प्यार करता हुं और जिंदगी भर करता रहूँगा। जबकि मैं ये जानता हुं कि आप के आगे मेरी कोई हस्ती नहीं है। पर फिर भी मैं अपनी जिन्दगी का फैसला आप के हाथों में छोड़ता हूँ। अब आप ही निश्चय कीजिए कि आप को क्या करना है। मेरी तो सॉसों की धड़कन भी आप के हुक्मों का गुलाम हैं संध्या जी। इस जन्म में आपको न पा सका तो अगले जन्म तक आपका इन्तजार करुँगा।आपका

गरीब अविनाश

नेहा : क्यू दीदी। क्या हुआ? बूला दूं इस लड़के को।

(संध्या मुस्कराने लगती है और नेहा समझ जाती है। अपने दीदी के दिल की बात और अगले दिन नेहा संध्या को लेकर उसके स्टूडियों को पहुँचती है। अविनाश संध्या को एकाएक देख कर चौक सा जाता है।)

अविनाश : अरे! संध्या जी आप, कहिए कैसे आना हुआ। इस गरीब की दुकान पर।

नेहा : आप ने हमारी दीदी को याद किया और हम लोग चले आये।।

शिक्षा विशेषाक निकलने पर हार्दिक बधाईया

पप्पू होजरी सेन्टर

भलुअनी, देवरिया, उ0प्र0 प्रो0 प्रेमशंकर चौहान

☎ 698989, 699112

CYBER POINT

मधु प्रेस के बगल, मिर्जापुर रोड, नैनी, इलाहाबाद–8

कम्प्यूटर जॉब वर्क, थीसीस वर्क, प्रोजेक्ट वर्क

स्क्रीन प्रिटींग, विजिटींग कार्ड, शादी कार्ड, पम्पलेट, पोस्टर की डिजाइनिंग का एकमात्र और उत्कृष्ठ संस्थान

प्रो0 हरि प्रताप सिंह

अविनाश : अरे बैठिए न। आप लोग खड़ी क्यू है।

(संध्या एकटक अविनाश को देखते हुए ध ीरे से बैठती हैं)

अविनाश : कहिए। क्या लेगी आप लोग ठन्डा या गरम।

नेहाः भाई, दीदी तो कुछ ले या न लें पर मुझे तो कोल्ड्रीन चाहिए।

(अविनाश कोल्ड्रीन मंगवाता है और बैठकर तीनों साथ पीते है।)

संध्या : आप ये जानते हुए भी कि मैं अपंग

(अविनाश संध्या की बात काटते हुए)

अविनाश : बस संध्या जी, बस। आज के बाद आप अपने को अंपग मत कहना। इंसान की पहचान तो उसके दिल से होती है और आप जैसा तो मैंने जिन्दगी में पहली बार पाया है।

संध्या :ये तो आपका बड़क्कपन है। अविनश जी। आप बहुत ऊँचे विचार के है जो....

अविनाश : बस संध्या जी। इतनी तारीफ न कीजिए मेरी।

(इतने में नेहा बोलती है)

नेहा : अच्छा दीदी। आप लोग बाते कीजिए और मैं चलती हूँ क्योंकि मुझे एक सहेली के यहॉ जाना है।

(इतना कर नेहा उठती है पर संध्या हाथ पकड़ कर)

संध्या :अरे रुक ना। नेहा मैं भी चलती हुँ।

नेहा : समझा करों न दीदी। मुझे देर हो जायेगी। (वह चली जाती है।)

संध्याः अच्छा अविनाश अब मैं भी चलती हुँ।

अविनाश : बैठिए न संध्या जी। अभी–अभी तो आयी है।

(अविनाश संध्या का हाथ थाम कर बिठा देता है और संध्या बैठ जाती है फिर अविनाश संध्या को निगाह भर के देखने लगता हैं।)

अविनाध : संध्या जी। ऐसा लगता है जैसे की आज मेरे सामने कोई अप्सरा आ गई है। सचमूच संध्या जी। आज मैं अपनी तकदीर को आप में देख रहा हुं। मैं तो सारी जिन्दगीं आपको ऐसे ही देखना चाहता हुँ, संध्या जी।

संध्या : अविनाश। ये बात–बात में आप मुझे जी–जी मत कहा कीजिए। बस संध या कहकर पुकारा करे। मुझको विश्वास नहीं हो रहा है अविनाश जी कि इतना प्यार करने वाला मुझे इस दुनियां में भी कोई है।

(अविनाश संध्या को अपनी बांहो में भर लेता है)

संध्या : ओ ये क्या कर रहे हो।

अविनाश :मैं आप को उर्म भर के लिए ऐसे हीं कैद करना चाहता हुँ, संध्या।

संध्या : पर मेरे आगे एक समस्या है अविनाश जी।

अविनाश : मेरे पास हर एक समस्या का समाधान है संध्या।

संध्याःमैं अपना काम मतलब स्टेज शो नहीं छोड़ सकती हुँ। अविनाश जी मेरा बचपन का शौक रहा है।

अविनाश : मैं आपको इसके लिए कभी भी नहीं रोकुगा, मुझे तो और खुशी मिलेगी संध्या तुम्हारा नाम होगा।

संध्या : अब छोड़िए भी सरकार कोई कस्टमर आ रहा है।

(अविनाश संध्या को अपनी बांहो से अलग कर देता है। संध्या चली जाती है और फिर अविनाश संध्या के घर आकर संध्या से शादी के बारे में बातचीत करता है। संध्या के सभी घर वाले तैयार हो जाते है। संध्या को एक अच्छा और समझदार जीवन साथी मिल जाता है। संध्या का जीवन खुशियों से भरने वाला अविनाश एक दिन फोटोग्राफी करते–करते फिल्मी दुनिया में पहुँच जाता है।

अविनाश : तुम कितनी लकी हों। संध्या देखो तुम्हें पाने के बाद तो मेरी किस्मत ही बदल गयी।

संध्या : ये तो किस्मत का खेल है अविनाश।

अविनाश : मेरी किस्मत तो तुम हो संध्या जो लक्ष्मी का रुप लेकर मेरे घर में आयी हो वरना मेरी भला क्या हैसियत थी।

दोनों हॅसी खुशी रहने लगते है।<u>समाप्त</u>

📖अनिता कुमारी चौहान

विष खा लिया मैंने जीवन जीने का
जिन्दगी नाम है जहर पीने का
मुझको लगी है पहली ठोकर, मैं औरत हूँ
तन को भी काट देती, फिर भी गैरत हुँ
खुशियॅा मनायीी सबने, जब जली औरत
हॅस के रुलाया सबने, कर दिया गैरत
क़फन न डाले कोई सुहागन है सजती
औरत की ज़िन्दगी है बड़ी सस्ती
चिंता नहीं जलती मेरी अर्थी है सजती
मजबूर करते है हमको जीने पे
पीना न चाहे, मगर विष पीने पे
इज्ज़त न जानी मेरी जानी न ज़िन्दगी
मगर मैंने फिर भी की उनकी बन्दगी
जी कर भी मैंने जीवन न पाया
मेरे मन में दर्दो का साया
विष खा लिया मैंने जीवन जीने का
ज़िन्दगी नाम है ज़हर पीने का।

प्रो0 एम.एन.अकेला ☎:413926
Smart Tailor
SPECIALIST IN SUIT & SAFARI
(सुट एवं सफारी के विशेषज्ञ)
पता : 50, कोठापार्चा, डॉट के पुल के बगल में, इलाहाबाद–3

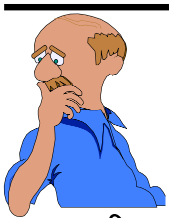

क्या जमाना आ गया है दोस्तों?

✍ राही अलबेला

समुद्र की गहराइयों में शादी

सैंटियांगो। वह शादी ही क्या जिसमें कोई नई बात न हो, कोई रोंमाच न हो। पानी के जहाज में, हवाई जहाज में और रेल में शादी होने के किस्से तो आपने जरुर सुने होंगे, यह भी सुना होगा कि फलां जोड़ा अंतरिक्ष मं शादी करने की योजना बना रहा है। लेकिन चिली के एक आशिक माशूक ने शादी करने का एक नया अंदाज अपना कर तमाम लोंगों को हैरान कर दिया। उन्होनें समंदर की गहराई में डेढ़ सौ मीटर नीचे शादी की रस्म अदा कर एक नया रिकार्ड कायम किया। मारिया ओरोजको और कारलोस गैरेरों की शादी इक्वीक्वी शहर के किनारे प्रशांत महासागर के अंदर संपन्न हुई। दूल्हा दुल्हन और उनके एक–एक साथी मास्क पहन कर और ऑक्सीजन टैंक बांध कर समंदर की गहराइयों में उतरे। ऊपर नाव पर पादरी ने अपना संदेश एक लकड़ी पर लिखकर रस्सी में बांधकर नीचे पहुंचाया, जिसका जवाब भी उन्होनें इसी रस्सी के जरिए ऊपर पहुंचाया। शादी की अनोखी रस्म को लोकल टीवी पर भी दिखाया गया। इस तरह शादी करने का कारण उन्होनें यह बताया कि यह हर हाल में साथ जीनें–मरने की भावना का प्रतीक है।

पति–पत्नी के बीच की दूरी को कम करता है मोबाइल

मोबाइल फोन के आविष्कार से संचार के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव आया है। दफ्तर हो या घर सड़क हो या थिएटर, हर जगह लोगों को मोबाइल पर बात करते देखा जा सकता हैं। लेकिन हाल ही में हुए एक सर्वे में यह तथ्य सामने आया है कि पति पत्नी के बीच सम्पर्क के आदान–प्रदान के लिए भी मोबाइल एक महत्वपूर्ण जरिया है। मोबाइल फोन ऑपरेटर ऑरेंज द्वारा एक हजार लोगों से बातचीत करने के बाद पता चला है कि तीन में से एक दंपत्ति दिन भर में तकरीबन दस बार एक दूसरे से मोबाइल पर बात करते है। इन दंपतियों द्वारा मोबाइल पर बातचीत करने का कारण भी कोई खास नहीं होता है। मसलन आज खान क्या बना बना है या कार ठीक हुई या नहीं। यहां तक की पति–पत्नी एक दूसरे को फोन पर चिढ़ाने से भी बाज नहीं आते है। खास बात यह है कि हर वक्त पति पत्नी को एक दूसरे के बारे में खबर मिलती रहती है कि वे कहां और कैसे हैं। जब मोबाइल फोन नही था, तब शायद ही कोई दंपति एक दूसरे की कोई सूचना या खबर भेज पाता था। लेकिन अब हर समय एक दूसरे के बारे में जानकारी मिलती रहती है कि वें कहां है और कितनी देर में घर पहुंचने वाले हैं। सर्वे के दौरान 81 फिसदी लोगों ने कहा कि दफ्तर में देर होने पर वे मोबाइल से घर खबर देते है। वहीं 67 फीसदी लोगों ने कहा कि अक्सर वे लोग अपना काम भूल जाते है, तब इसकी खबर मोबाइल से घर पर देते है।

चोर को मिली नौकरी

ग्रिम्सबी। 27 वर्षीय एक चोर फॉलर और होल्डर नाम की कंपनी से छ महीने पहले 300 पौंड ले उड़ा था, लेकिन पकड़ लिया गया। वह लंबे समय से नशीली दवाओं का भी शिकार था। इस लूट की सजा के तौर पर जज ने उसे एक साल तक सामुदायिक सेवा करने का आदेश दिया। इस पर उसी कंपनी ने उसे अपने यहां नौकरी का प्रस्ताव दे डाला, जहां उसने चोरी की थी। कंपनी के मालिक का मानना है कि अगर वह खुद को सुधारना चाहता है और साथ ही नशीली दवाओं से पीछा भी छूड़ाना चाहता है, तो तो उसे कंपनी नौकरी देने को तैयार है, लेकिन एक शर्त यह रख रही है कि वह अपने वेतन से उस पैसे का भुगतान भी करेग, जो उसने चुराए थे। कंपनी क`मालिक ने कहा है कि उसका कंपनी में स्वागत है, लेकिन दिन के उन घंटो में ही, जब वहां काम होता है, रात के अंधेरे में नहीं।

पैंट छोड़ भागा चोर

यूजीन। एक बीस साल का नैसिखुआ चोर चोरी के इरादे से एक घर में घुसा। न जाने उसे क्या सूझी कि उसने अपने कपड़े उतर दिये। उसके दुर्भाग्य से उसका ड्राइविंग लाइंसेस पैंट की जेब में ही था। घर में घुसते ही वह उस कमरे में गया, जहां एक महिला अपने पति के साथ सो रही थी। चोर को देखते ही उस महिला की नीद टूट गई और उसने शोर मचाकर अपने पति को जगा दिया। यह सब देखते ही वह चोर अपने होशो हवास खोकर बिना कपड़ो के ही भाग गया। पुलिस ने पैंट के पॉकेट में रखे लाइसेंस में लिखे पते के आधार पर चोर को गिरफ्तार कर लिया।

कहानी

अनोखा रिस्ता

रजनीश कुमार तिवारी

आकाश में काले घने बादलों की उपस्थिति और बिजली की गड़गड़ाहट कुछ बताने को आतूर है, राज कुछ व्याकुल–व्याकुल सा अपने कमरे में बैठा है। उसे यह मौसम एकदम नहीं पसन्द क्योंकि यह मौसम एक अजीव सी खामोसी को अपनी ध्वनि से सुसज्जित करता है, कभी कोई पत्रिका उढाता तो कभी कोई कार्य करना चाहता। परन्तु उसका मन कहीं नहीं लगता है क्योंकि आज 26 तारिख है। राज उलझन को मिटाने के लिए आलमारी से अपनी डायरी निकालता है। उसे पढ़कर मन हल्का करना चाहता है, ज्योंहीं वह डायरी खोलता है। उसमें से दो खत गिरकर बिखर जाते है, वह उन्हें उठाता है। एक खत पर लिखा था

प्रिय नीलम
कंगन यदि मेरे पहन ना सको
राखी से भी दूरी रखना
रो ना सको जो हमपें तुम
हॅसने का तो अधिकार रखना
इतना उपकार हमपें करना।
राज

और दूसरे खत में लिखा है –'भइया तुम जरुर आना

इतना पढ़ते वह अपने कई वर्ष पूर्व के 26 जनवरी की शाम के ईदगीर्द मडराने लगता है जब वह अपने घर में दोस्तों और मेहमानो से घिरा रहता हर तरफ से लोगो के हॅसी मजाक ठहाकों से पूरा घर गुंजा–2 सा रहता था। पूरे मकान पर टिमटिमाते बल्व मन्द–2 स्वरों में संगीत से पूरा आलम भींगा–2 सा था कुछ वर्ष पूर्व आज की तारिख में अपने जीवन की शुरुआत करने जा रहा था। आज वह बाजे गाजे के साथ अपने जीवन संगीनी के घर पहुँचता है। गुजरते देर नहीं लगी वह बहुत खुश था क्योंकि आज उसकी सुहागरात है। और सबसे बड़ी खुशी की बात यह थी कि आज जिस मोना को ब्याह कर लाया है

> राज ने अभी अपना पैगाम दिया ना था कि नीलम ने एक लिफाफा राज की ओर बढ़ा दिया। राज उसे देखता ही रह जाता है क्योंकि मंजील अपनी राहे खुद बता गयी।

वह कोइ अपरिचित नहीं उसके ही साथ कॉलेज में पढ़ी सहपाठी थी। राज खुशी–2 कमरें मे प्रवेश करता है। पर यह क्या, पत्नियों को पैर छूने को सुना था परन्तु उस वक्त बहुत आश्चर्य हुआ जब मीना ने कमरे में प्रवेश करते ही मेरे पैर पकड़ लिए और बिलखते आंसू से परिचय कराया और उस क्षण मेरे जेहन में एक बिजली सी कड़की और मोना ने मुझसे कहा 'राज' तुम मेरे कक्षा के सहपाठी हो मुझे तुमसे कुछ नहीं चाहिए,मेरा विवाह मेरी मर्जी के विपरीत हुआ है। मैं कॉलेज के दिनों से ही तुम्हें अच्छी तरह से जानती हुॅ। तुम स्वभाव के बहुत अच्छे हो पर हम क्या करें हम किसी रिस्ते को एक बार समझ कर उसे निभा नहीं सकते। राज के कुछ समझ में नहीं आ रहा था। वह उसकी बातों को सून रहा था और पूछता है। मीना आज तुम्हारा मुझसे विवाह हुआ है। तुम मेरी पत्नी हो। अब ऐसा क्या रह गया रिश्ते में। यह सुनते ही मीना कहती है–राज मैं तुम्हारे मित्र राकेश को अपन सब कुछ मानती हुॅ। उसके सिबा किसी के लिए मेरे पास कुछ नहीं है। मैं मर जाऊॅगी पर किसी को हाथ नहीं लगाने दूंगी। राकेश भी मुझे जी जान से चाहता है। अचानक राज की एक चीख से पूरा कमरा गॅूज उठता है। आखिर तुम्मारा मुझसे क्या रिश्ता है, मीना के स्वर से निकलता है। भाई का राज 'भाई' का पूरा महौल शान्त हो जाता है। राज भाई 'शब्द' सुनकर दिल पकड़कर बैठ जाता है। शायद उसका कोई पूराना जख्म हरा होकर उसमें टीस पैदा कर रहा है। वह कमरे की खिड़की पर खड़ा शुन्य को निहारता रहता है और अपने अतीत की यादों में खो जाता हैं। 'राज' ने जब बीए के प्रथम वर्ष में दाखिला दिया था वह एक होनहार विद्यार्थी के रुप में स्कूल में चमका था पर किस्मत हमेशा उसकी मेहनत पर पानी भेर देती थी। वह आर्थिक स्थिति से कमजोर होने की वजह से उसके कॉलेज में छात्रवृत्ति हेतु आवेददन दिया परन्तु अच्छे नम्बर होने के बावजूद उसको छात्रवृत्ति नहीं मिल सकी। वह किसी तरह अपने लिए किताबों की व्यवस्था करके अपना अध्ययन जारी रखना चाहाता

था। प्रथम वर्ष अच्छे पूर्णांक से पास हुआ फिर द्वितीय वर्ष छात्रवृत्ति के लिए आवेदन दिया लेकिन किस्मत ने उसका यहां भी साथ नहीं दिया। एक दिन क्लास में वह अकेला बैठा अपने भाग्य को कोश रहा था कि एक खूबसुरत सी लड़की उसके सामने आकर खड़ी हो गयी। उसने स्वयं अपना नाम नीलम बताया और मुझसे अनुरोध किया कि वह मुझ पर यकीन कर अपना पढ़ने में मन लगाए। वह उसकी किताव कॉपियों से पूरी मदद करेगे। उसके लिए वह देवी समान बनकर सामने थी। उस दिन से उसने बराबर उसके अध्ययन में सहयोग किया। वह उसके नोट्स बगैरह बना दिया करता था। वह धीरे–धीरे मेरे करीब आती गयी कब दिल की गहराईयों तक उतर गयी। पता ही नहीं चला। मैं विद्यालय से उसे सपनों के घर में लाया था। मैं और मेरा मित्र राकेश और नीलम एक साथ उठते और एक साथ बैठते थे। दिन गुजरते रहे मैं कभी भी नीलम से यह कहने की हिम्मत नहीं जुटा सका कि मैं उसे चाहता हुं। मौका खोजता रहा पर उससे कहने का अवसर नहीं आ सका। एक दिन नीलम मेरे कमरे में अकेले हीं आ गयी। मैंने इससे अच्छा अवसर कभी नहीं सोचा और एक खत लिखा जिसे लेकर नीलम के पास पहुँचा। अभी हम अपना पैगाम दें भी नहीं पाए थे कि नीलम एक लिफाफा मेरी ओर बढ़ा दी और कहा 'भइया' आप जरुर आइयेगा। हम आपका इंतजार करेंगे। '' राज'' के दिल की धड़कनों ने धड़कना बंद कर दिया। राहे मंजिल खुद बता गयी। उस कार्ड में लिखा था राकेश परिणय नीलम। मेरे मित्र का विवाह मेरे जिगर के टुकड़े से होगा। मैं दिल में अरमा लिए इस रिश्ते को रटता रहा–भइया, भइया, भइया ......

.... कि अचानक आंधी के एक झटके से दरवाजे के दोनों पल्ले खुल गये और मेरी अतीत की यादों ने यहां भी यही कहकर साथ छोड़ा भइया मुझे क्षमा करना। सामने देखा मीना अपने पेट में सब्जी काटने वालो चाकू से वार करती जा रही थी और बोलती जा रही थी भइया माफ करना, भइया माफ करना। जब तक मैं उसके पास पहुचता तब तक मीना इस संसार से विदा ले चूकी थी।

बादलों का प्रकोप जारी जारी है। मैं आज बहुत व्याकुल सा हूँ क्योंकि आज 26 तारिख है। इस तिथि से आज तक मैं बिल्कूल सूना–2 सा हुं। एक दिन रास्ते में नीलम से मूलाकात हुई। उसकी सुन्दर से चेहरे पर सफेद साड़ी माथे पे सूनी सी रेखा खाली कलाइया देखकर मैने पूछा–'नीलम! यह क्या।' तो नीलम ने उत्तर दिया था कि शादी के पहले ही दिन राकेश ने आत्महत्या कर ली थी क्योंकि वह मीना को चाहता था और उसके परिवार वालों ने दबाव में उसकी शादी मुझसे कर दी थी। परन्तु राकेश उसे महज बहन समझता था। 'राज' यह सुनकर आसंमा की ओर देखता रहा और घर चला गया। यहां भी बादलों के कानेपन उसका पीछा नहीं छोड़ते हैं। वह बड़बड़ा उठता है कैसा है। यह 'अनोखा रिश्ता' कैसा है यह अनोखा रिश्ता'

वहीं अंगारे बरसते देखा है

अनिल कुमार गुप्ता

जिस वतन में फूल बरसते थे,
आतंकवाद से लड़ रहे, वीर–जवानों को मर मिटते देखा है
जिन ऑखों में खुशी झलकती थी, आंसुओं को बहते देखा है,
जो बने इस वतन के लिए, उन्हें भी बिगड़ते देखा है।
वतन के प्रिय नेताओं को राष्ट्र–हित के लिए जान गंवाते देखा है,
आजाद, बिस्मिल, बोस जैसे वीरों को देश के खातिर मरते देखा है।
सुख के उजियारे के साथ–साथ, गम के अंधियारे भी देखा है,
जिस वतन में फूल बरसते थे, वहीं अंगारे बरसते देखा है।
गैर तो साथ देते हैं, मैंने अपने को धोखा देता देखा है,
कलियुग में सब कुछ संभव है, मैने राम को सीता तजते देखा है
जिसने पाल–पोष कर बड़ा किया, उसको धक्का खाते देखा है,
देश के रक्षक को जनता का शोषण करते देखा है।
नेताओं को नोट के बल पर वोट खरीदते देखा है,
जिस वतन में फूल बरसते थे, वहीं अंगारे बरसते देखा है।
बागों में कलियां खिलती है, उनको भी मुरझाते देखा है,
किसी प्रेम–दीवाने को किसी पे मरते मिटते देखा है।
उपवन में मतवाले भौंरे को, कलियों पर मंडराते देखा है,
जिस वतन में फूल बरसते थे, वहीं अंगारे बरसते देखा है।

सफलता के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण अपनायें

डी.के.बख्शी

प्रत्येक को अपना दृष्टिकोण स्पष्ट रुप से व्यक्त करना चाहिए। इसे इतना अधिक मजबूत बनाइए कि वह भावना व व्यवहार से ऊपर उठ जाए। उन बिंदुओं को एकत्रित कीजिए जो सकारात्मक दृष्टिकोण को तैयार करता हो। अपनी भावनाओं को उस स्थिति में व्यक्त करना चाहिए जो आपमें उमंग का संचार करे। अपने दृष्टिकोण का प्रयोग आप बदलाव व सफलता के लिए करिए। इसीलिए मजबूत सकारत्मक दृष्टिकोण तैयार करना।

महान आदर्शो के साथ सही दृष्टिकोण बनानाः रणनीति का परिणाम क्रियान्वयन होना चाहिए है। सभी महान विचार निरर्थक है यदि उन्हें जल्दी प्रभावीं रुप से सकारात्मक सोच के साथ व सही दिशा में लागू न किया जाए। इसके लिए व्यक्ति को सही दृष्टिकोण विकसित करना पड़ेगा। छोटे–छोटे वायदे और समर्पण मिलकर एक बड़ा वायदा बनाते हैं। और यदि हम छोटे वायदे करने व उन्हें पूरे करने की आदत डाल लें तो इसकी काफी संभावना है कि बड़े लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। केवल यही वह कार्यकारी बल है जो दृष्टिकोण को विचार में और विचार को क्रिया में बदलता है।

सही दृष्टिकोण से गति में सुधार लाएंः कल का विजेता वह नहीं हो सकेगा जिसके पास ज्यादा संसाधन है या जो बड़ा है बल्कि वही विजेता होगा जो महान दृष्टिकोण के साथ तेज चल सकेगा। सूचना क्रांति के क्षेत्र में चाहे जिस भी साधान का प्रयोग करें लेकिन ऐसे दृष्टिकोण के साथ कि वह आपके लक्ष्य की ओर और अधिक तेजी से ले जाए।

सूचना क्रांति के इस युग में मूल्यों से समझौता कभी न करें : एक सही दृष्टिकोण का व्यक्ति मूल्यों से कभी समझौता नहीं करता। ऐसा कभी भी त्वरित मार्ग नहीं है जो कि सतत सफलता दिला सके। हमारे सैद्धातिक मूल्य जीवन के झंझावती दौर में हमें सही दिशा दिखाते हैं। और विपरित परिस्थितियों का सामना करने के लिए आवश्यक लचीलापन भी देते है।

विरोधाभासों को प्रबंधित करना सीखिएः जीवन की सभी घटनाओं में हमेशा दिन व रात की तरह स्पष्ट उत्तर नहीं मिल पाते हैं स्पष्टता का इंतजार करते–करते कई बार कार्य करने का मौका हाथ से निकल जाता है। उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निर्णय लें और सकारात्मक तरीके से आगे बढ़ जाए।

जीतने के लिए खेले : विजयी होने की इच्छा से ही कार्य करिए। बेवजह नहीं । इससे आपमें एक नई शक्ति व दिशा का संचार होगा। विजयी होने के उद्देश्य से कार्य करने का मतलब यह नहीं कि आप गलत तरीको को अपनाएं। विजयी होने का मतलब है अपनी क्षमताओं को गहराई से जानना तथा उसका अधिकतम उपयोग करना।

जुनून पैदा करेंः अपनें में व अपने साथ के लोगों में एक जुनून पैदा करें जिससे कि वे बाधाओं के डर से मुक्त हो सकें। जुनून न सिर्फ आपकें अंदर एक चिंगारी पैदा करता है बल्कि आपके आस–पास वालों को भी प्रेरणा देता है। अपने प्रदर्शन को आश्चर्यजनक रुप से अच्छा बनाने के लिए अपनें अंदर जुनून पैदा करें। क्योंकि आपका प्रतियोगी कोई और नहीं आप ही है।

हिम्मत रखें : अगर आप सफल होना चाहते है तो हिम्मत के साथ खेल में बने रहिए। हिम्मत हमेश दृढ़ विश्वास से आती है। दृढ़ विश्वास आपके दृष्टिकोण की उपज होता है।

बदलाव के प्रति वचनबद्ध होंः परिर्वतन एक सतत प्रक्रिया है वस्तुतः यह कभी न खत्म होने वाली प्रक्रिया है। दृष्टिकोण में परिर्वतन जरुरी है। परिर्वतन परिस्थितियों व अवस्था के अनुसार होना चाहिए। सफलता को बनाए रखने का मामला अपने को पुर्ननवीकरण व स्वयं को भी उत्साहित करने का है।

अलोचना, विरोध या शिकायत न करें : जब आप किसी व्यक्ति से बात करें तो आपको यह याद रखना चाहिए कि आप एक तार्किक प्राणी से बाते कर रहे है। कोई भी वेबकूफ व्यक्ति आलोचना कर सकता है, आरोप लगा सकता है व शिकायत कर सकता है, और ज्यादातर वेबकूफ लोग ऐसा करते भी हैं। सकारात्क दृष्टिकोण व विचारों के साथ एक महान व्यक्ति अपनी महानता प्रदर्शित करता है।

लतीफा

मैंने तुम्हे कई बार मना किया है कि हर बात में बजा फरमाया हूजुर' मत कहा करो। मगर तुमने इसकी रट लगा रखी है। कान खोल कर सुन लो, अगर तुमने अब इस वाक्य को फिर से बोला, तो समझो तुम्हारी नौकरी गई।

नौकर– बेजा फरमाया हूजुर।

ज्ञानेन्द्र सिंह,
एडवोकेट, हाइकोर्ट

महिला को वसीयत करने का अधिकार

सन 1956 का हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम पारित होने से पूर्व सम्पत्ति में स्त्रियों के अधिकार अत्यन्त सीमित थे। अधिकारों की दृष्टि से उस समय सम्पत्ति दो वर्गों में विभक्त की जाती थी–स्त्री धन एवं स्त्री सम्पदा। स्त्रीधन का वह मनचाहा उपयोग एवं उपभोग कर सकती थी, लेकिन स्त्री सम्पदा का उपयोग उपभोग तो वह जीवन पर्यन्त कर सकती थी, किन्तु उसका अन्तरण नहीं कर सकती थी। हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम के पारित होने के पश्चात् जो भी सम्पत्ति स्त्री के पास है, चाहे उसका उस पर भौतिक रूप से कब्जा है या नहीं, वह उसकी निरपेक्ष स्वामिनी है। उसी अधिकार के कारण वह अपनी सम्पत्ति की वसीयत भी कर सकती है।

हिन्दू विधवा और वसीयत–

एक हिन्दू विधवा स्त्री अपनी स्वअर्जित सम्पत्ति और स्त्रीधन के रूप में प्राप्त सम्पत्ति की वसीयत कर सकती है। वसीयत करते समय उसका स्वस्थ–चित्त होना आवश्यक है।

यदि पति की मृत्यु होने पर सम्पत्ति के अधिकार संयुक्त कुटुम्ब में होते हैं, तो ऐसी परिसिथित में विधवा को वसीयत करने का अधिकार नहीं है।

यदि किसी महिला को कोई सम्पत्ति किसी दस्तावेज या अभिलेख तथा न्यायालय की डिक्री से प्राप्त होती है, तो वह उस सम्पत्ति की पूर्ण स्वामिनी होगी एवं उसके बारे में जैसे चाहे वसीयत लिख सकती है या सम्पत्ति का अन्तरण कर सकती है।

सुरेश गोविन्द बनाम रघुनाथ ए0आई0 आर0 1989 बाम्बे 207 के प्रकरण में रामबाई को वादग्रस्त सम्पत्ति उसके पति द्वारा लिखी गई वसीयत से प्राप्त हुई। ऐसी स्थिति में न्यायालय ने यह माना कि वह सम्पत्ति का अन्तरण किसी भी तरह से कर सकती है।

विमन राय बनाम श्रीमती उषा ए0आई0आर0 1989 एन0ओ0सी0 19. .... कलकत्ता के प्रकरण में एक हिन्दू ने अपनी पत्नी के नाम वसीयत लिखी, जिसमें मकान एवं नकद रूपये आजीवन उपयोग के लिए लिखा। इस बीच हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम पारित हो गया, तो उच्च न्यायालय ने कहा कि आजीवन का अधिकार पूर्ण अधिकार में परिवर्तित हो गया है, इसलिए वह जैसे चाहे वसीयत कर सकती है।

हिन्दू विधवा मृत पति की इच्छा के आधार पर वसीयत कर सकती है– एक मामले में हिन्दू विधवा ने अपने मृत पति की सम्पदा को अपनी दोनों पुत्रियों के नाम वसीयत किया, तो न्यायालय ने इस वसीयत को सही माना, क्योंकि यह वसीयत उसने पति की इच्छा से की थी।

एक प्रकरण में वसीयतकर्ता ने अपनी वसीयत में पत्नी को अन्तरण का अधिकार दिया। यदि अन्तरण के पश्चात् महिला के पास सम्पत्ति शेष

रह जाती है, तो वह सम्पदा पति के उत्तराधिकारियों को मिलेगी।

अनपढ महिला द्वारा वसीयत–

यदि महिला पढी–लिखी नहीं है, तब भी वह वसीयत कर सकती है। वह अपनी इच्छा प्रकट कर उसे लिपिद्ध कराकर वसीयत के रूप में कराए, फिर इसे सुनकर इस बात का विश्वास कर ले कि उसमें वही बातें लिखी हैं, जो उसने बोली हैं, तब वह उस पर अपनी अंगूठा निशानी लगा दे, फिर गवाहों से अनुप्रमाणित करवा ले। वसीयत लिखने में अनपढ होना किसी प्रकार का सन्देह प्रकट नहीं करता।

यदि किसी महिला को हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम 1956 के लागू होने से पूर्व कोई सम्पत्ति भरण पोषण के लिए मिली है, तो वह स्त्री अधिनियम के पारित होने के पश्चात् उस सम्पत्ति की पूर्ण स्वामिनी होगी और वह उसकी वसीयत कर सकती है।

नन्हें समाचार

फूल खाएं घोड़ा

कीव (उक्रेन)। यहां एक लड़की सैलानियों को घोड़े की सवारी करा कर अपनी रोजी–रोटी कमाती है। जब सैलानी नहीं मिलते तो उसका कुत्ता घोड़े की सवारी करता है। घोड़ा भी अनोखा है। उसे चारे की जगह फूल खाने का शौक है।

समुद्र में राजकुमारी

बार्सीलोना। नाम है उसका ग्रांड प्रिसेस। उसमें एक हजार दो सौ छियानवें कमरे हैं। हर कमरे के साथ एक वरांडा है। इसमें बैठकर समुद्री दृश्यों का आनन्द लिया जा सकता है। यह जहाज मुख्य रुप से उन लोगों के लिए बनाया गया है, जो समुद्री यात्रा का आनन्द लेते हुए अपनी छुट्टियां बिताना चाहते हैं।

सारस जाए कहां–कहां

भरतपुर। दो साईबेरियाई सारसों पर रुसी वैज्ञानिकों ने ट्रांसमीटर लगाए थे। इन ट्रांसमीटरों के जरिए सारसों की यात्रा का पूरा विवरण रखा गया। ये सारस भरतपुर के राष्ट्रीय केवलादेव उद्यान में आए। फिर मौसम गरम होने पर ये रुस लौट गए। छह हजार किलोमीटर की यात्रा, इन सारसों ने पिचासी दिनों में पूरी की। रुस पहुंचने से पहले इन्होनें अफगानिस्तान में पड़ाव डाला।

पेड़ो का विवाह

कोच्चि। केरल के पास रामास्वामी मंदिर में एक अनोखा विवाह हुआ। इस विवाह में वट वृक्ष को दूल्हा और नीम के वृक्ष को दुल्हन बनाया गया। मंदिर में बारह सौ वर्ष एक वट वृक्ष लगाया गया। उसी के पास नीम का वृक्ष लगाया गया। फिर इन दोनों का विवाह कराया गया। इस अनोखे विवाह को देखने के लिए सैकड़ों लोग उपस्थित थे।

मगरमच्छ का जन्मदिन

हांगकांग। यहां दुनिया के सबसे बड़े मगरमच्छ ने अपना छब्बीसवां जन्मदिन मनाया। उसके साथी जानवरों की तरफ से उसे मनपसंद भोजन दिया गया। यह मादा मगरमच्छ अठारह फीट लम्बी है। वजन है– एक हजार एक सौ चौदह किलो।

अधिक स्कूल

पंजिम। गोवा में विद्यालय अधिक है जबकि छात्रों की संख्या कम है। आम तौर पर शिकायत की जाती है कि स्कूल कम है और बच्चे अधिक। स्कूल खोलने के लिए गोवा में सरकारी मदद भी खूब दी गई है। यहीं नही, यहां अठारह छात्रों पर एक अध्यापक है।

अमरीका में भारतीय

वाशिंगटन। अमरीका में भारतीय मूल के लोगों की संख्या दस लाख अस्सी हजार हैं। अमरीका में सबसे अधिक पटेल उपनाम वाले लोग रहते है। इसके बाद सिंह, शाह, देसाई शर्मा, कुमार, मेहता, गुप्ता और राव आते है।

लाखों में बिका झंडा

न्यूयार्क। टाईटैनिक जहाज का एक झंडा और जीवन रक्षक पटिटका चौंतिस लाख रुपये में बिकी। डूबे हुए जहाज की ये वस्तुएं 1912 में लाई गई थीं।

मंगल का टुकड़ा खरीदा

सेन फ्रांसिस्कों। मार्क लेनी पेशे से इंजीनियर हैं। उसने एक नीलामी के दौरान मंगल ग्रह की चट्टान का छोटा–सा टुकड़ा खरीदा। पृथ्वी पर आई एक उल्का के टुकड़े को भी खरीदा। लेनी का कहना है कि अंतरिक्ष के रहस्य उसे बहुत आकर्षित करते है। अब वह गर्व से कह सकता है कि वह मंगल के छोटेसे टुकड़े का स्वामी है।

जीतों 5000/रुपये के ईनाम

बच्चों के लिए

दिवस प्रतियोगिता न. 2

यहां पर 10 सवाल हैं। उनके सामनें खली जगहों में उनके उत्तर को लिखकर हमें भेजें। सही उत्तर भेजने वालों को मिलेगें ढेरों ईनाम। नीचे दिये गए चौकोर कागज को काटकर हमें 15.08.2002 तक साधारण डाक से भेंजे।

1.बाल दिवस ....
2.स्वतंत्रता दिवस ....
3.गणतंत्र दिवस ....
4."विश्व स्नेह समाज" मासिक पत्रिका का अनावरण दिवस ....
5.गांधी जयंन्ती ....
6.शिक्षक दिवस ....
7.लाल बहादुर शास्त्री का जन्म ....
8.सुबाष चन्द्र बोस जयन्ती ....
9.पर्यावरण दिवस ....
10.रैदाश जयन्ती ....

भेजने वाले का नाम : ....
आयु : ....कक्षा : ....
स्कूल का नाम : ....
....
पता : ....
....

विजेताओं के ईनाम डाक द्वारा या हाथों–हाथ वितरित होंगे।

कूपन भेजने का पता :

दिवस प्रतियोगिता न0 2,
मासिक पत्रिका "विश्व स्नेह समाज"
नितीन काम्पलेक्स,मेवालाल की बगिया, नैनी, इलाहाबाद–8

ललिता शास्त्री ने विदेशी चूड़िया फोड़ी

पं0 जवाहर लाल नेहरू के निधन के बाद 1964 में प्रधानमंत्री लालबहादूर शास्त्री कस जन्म 2 अक्टूबर, 1904 को तूबल यरास में हुआ था किन्तु आजीवन उनका इलाहाबाद से अटूट रिस्ता रहा।

उन्होंने दलाहाबाद में काफी वर्ष गुजारे। अपनीं कर्मठता, विनम्रता, सजन्नता, ईमानदारी तथा संतुलित व्यवहार के कारण वे हमेंशा निर्विवाद रहे। इलाहाबाद की बहुकोणीय राजनीती का हर खेमा उन पर विश्वास करता था। जब कभी विवाद होता तो उनके नाम पर सहमति हो जाती। पंडित जवाहरलाल नेहरू ताथा राजर्षि पुरूषोत्तम दास टंडन के बीच उनकी भूमिका सेतु की थी। शीर्ष नेता से लेकर सामान्य कार्यकर्ता तक से लालबहादुर शास्त्री का आत्मीयता रिश्ता था।

लालबहादुर शास्त्री के पिता शारदा प्रसाद इलाहाबाद में कायस्थ पाठशाला में शिक्षक थे। वे अपनें परिवार के साथ अहिया पुर मुहल्ले में रहते थे। 14 जनवरी, 1904 को लालबहादुर शास्त्री के मॉ अपनें पति के साथ सवा तीन माह के लालबहादुर शास्त्री को लेकर संगम स्नान के लिए गयीं। भीड़ में उनकी मॉ को धक्का लगा और यमुना तट पर नाच तय करते समय लालाबहादुर अपनी माता के कंधे से छटककर एक नाव में जा गिरे। उनकी मॉ यमुना तट पर बैठकर विलाप करनें लगीं और उनके पिता उन्हें खोजनें में लग गये। लालबहादुर संगम जा रही एक नाव के उपर रखी एक टोकरी में गीर गये थे। टोकरी एक दुधवाले की थी। यात्रियों से भर जानें पर नाव जब चली तो दुधवाले सहित अन्य यात्रियों का ध्यान टोकरी में गिरे लालबहादुर पर गया। दूधवाला निःसंतान था। उसनें शिशु लालबहादुर को दठाकर अपना गमछा ओढ़ा दिया। वह बालक मिलनें से खुश था। नाव जब पुनः तट पर लौटी तो लालबहादु के पिता की निगाह उन पर उड़ गयी। दूधवाला तो पहले बच्चा देनें को तैयार नहीं हुआ किन्तु उनकी माता द्वारा शिशु लालबहादुर को उठा लेनें तथा यमुना तट पर जुड़ी भीड़ के दबाव में दूधवाला बच्चा लौटानें को तैयार हो गया। लाल बहादुर के पिता ने दूधवाले को ऊॅनी चादर और पांच रूपये दिये। वे लाल बहादुर को लेकर खुशी – खुशी घर आये।

लालबहादुर केवल सवा साल के थे कि दनके पिता का निधन हो गया। उनकी शिक्षा–दीक्षा बनारस में हुई। काशी विद्यापीठ में पढ़ते समय उन्होंनें पहल बार आंदोलन में भाग लिया। 16 मई, 19 28 को लाल बहादुर शास्त्री का विवाह मिर्जापुर के गणेश प्रसाद की पुत्री ललिता देवी से हुआ।

लालबहादुर शास्त्री इसके पूर्व लाला लाजपत राय द्वारा स्थापित लोंकसेवक मंडल में काम करते थे। उस समय उन्हें पचास रूपये मासिक मिलते थे। विवाह के बाद उनका मासिक वेतन बढ़कर एक सौ पांच रूपये हो गया। मेरठ, मुज्जफरनगर तथा बनारस में रहनें के बाद उनकी तैनाती इलाहाबाद में हुई। लालबहादुर शास्त्री नें जीरो रोड पर एक मकान किराये पर लिया। मकान के निचे वाले हिस्से में विनोदिनी नामक एक महिला रहती थी। वे सरकार विरोधी कार्यक्रमों में सक्रिय भाग लेती थी। लालबहादुर शास्त्री की मॉ भी उनके साथ रहती थीं। आरम्भ में उन्होंनें ललिता शास्त्री को आंदोलन में भाग लेनें की अनुमति नहीं दी किन्तु राष्ट्रीय नेताओं की जनसभाओं में वे स्वयं ललिता शास्त्री को लेकर जाती थी।

1929 के आरम्भ के लालबहादुर शस्त्री सपरिवार लीडर रोड पर रहनें लगे। इस मकान के निचले हिस्से में कांग्रेस नेता मोहन लाल गौतम सपरिवार रहते थे। कमला नेहरू नें एक बार खुद आकर लालबहादुर शास्त्री की माता से भेंट की और ललिता शास्त्री को आंदोलन में भाग लेनें की अनुमति दिलायी।

एक बार ललिता शास्त्री और मोहन लाल गौतम की पत्नीं चौक में विदेशी कपड़ों की एक दुकान पर धरना दे रही थीं। वे लोगों से कपड़ा न खरीदनें का आग्रह कर रही थी। उस दुकानदार नें उन दोनों से कहा– आप विदेशी कपड़ा खरीदनें के लिये मना कर रही हैं लेकिन खुद विदेशी चुड़ियां पहनें हुए हैं। गौतम जी की पत्नी पश्चिमी उत्तर प्रदेश की रहनें वालीं थी। वे बोल– तु भी तो जो घड़ी हाथ में बाधे है, विदेशी है। इस पर दुकानदार बोला– मैं तो विदेशी सामन वेचता ही हूॅ मुझे विदेशी से परहेज थोड़े ही है। ललिता शास्त्री और श्रीमती गौतम नें शाल के नीचे हाथ करके चुड़ियां उतारी और पीछे चोटी में बांध लीं। उसके बाद दोनों नें दुकानदार से पुछा– आप हमारी चुड़ियों को विदेशी बता रहे हैं अगर हम अपनीं चुड़ियां फोड़ दें तो क्या आप भी

घड़ फोड़ देंगे? दुकानदार को न जानें क्या सुझा उसनें हॉं का दिया। दुकानदार के बात के दौरान शास्त्री जी और मोहनलाल गौतम भी वहॉं आ गये। दोनों नें उनसे कहा– ये कह रहे हैं हमारी चुड़ियॉं विदेशी हैं? शास्त्री जी नें कहा – जब ये कह रहे हैं तो हो सकता है। उन्होंने संकेत से चूड़िया फोड़ डालनें को कहा शास्त्री जी और गौतम जी की पत्नीं ने चोटियों से दो डोरे तोड़कर हाथों में बॉंध लिये और फिर चूड़ियां। फोड़ डालीं। अब गौतम जी की पत्नीं नें दुकानदार से घड़ी फोड़नें को कहा तो वह आनाकानी करने लगा। वहाँ एक सज्जन कपड़े खरीद रहे थे। वे सारे वाकये के वे गवाह भी थे। उन्होंने दुकानदार से विदेशी घड़ी फोड़ने को कहा। बात बढ़ती गयी। उन्होने खुद खरीदे हुए विदेशी कपड़ों में आग लगा दी और फिर दुकान में भी आग लगा दी। मामला तूल पकड़े इससे पहले ही शास्त्री और गौतम जी वहाँ से चले गये।

आवश्यक सूचना आंमत्रित है

लेखको से लेख, कहानियां, रोचक सस्मरण, आदि आमंत्रित है। अपनी रचनाओं के साथ में जवाबी लिफाफा लगाना न भूलें नहीं। नहीं तो प्रकाशित नहीं होने संदर्भ में रचनाओं को लौटाया नहीं जाएगा। रचनाओं को हासियां छोड़कर स्पष्ट शब्दों में लिखें।

आवश्यक सूचना

दोस्तो बधाई हो। इस कालम के अन्दर आप अपने इष्टमित्रो, रिश्तेदारों, सहयोगियो इत्यादि के जन्मदिन/ शादी शादी वर्षगांठ/ होली/ परीक्षा पास करने पर/नौकरी प्राप्त करने पर/प्रमोशन इत्यादि पर बधाई संदेश भेजना चाहते है तो आपको अपना संदेश, संदेश प्राप्त करने वाले व्यक्ति का पता व 25.00 रुपये मात्र देना होगा। अगर आप फोटो भी छपवाना चाहते है तो आपको 50.00रुपये व फोटो देना होगा। आपका संदेश पत्रिका में छपेगा और पत्रिका परिवार उस अंक को आपके द्वारा दिये गये पते पर डाक से भेजने की व्यवस्था करेगा।

व्यंग्य

होम कथा विशेषांक

राजेश कुमार वर्मा
225/112, हिम्मंतगंज, इलाहाबाद

"होम कथा विशेषांक' की सराहना में परियों की सहजादी मेरा प्रणाम। मेरे हृदय रुपी उपवन की मन रुपी डाली पर निवास करने वाली कोकिला कंठ"

अच्छे विचार रखना भितरी सुन्दरता है।

मेरे सपनों की रानी, कल्पनाओं का वो सुहावना मंजर मेरे हम दम मेरे जीवन साथी सच मूच तुम्हारा सौन्दर्य ही अलौकिक है जब भी मैं तुम्हारे अलौकिक सौन्दर्य को निहारता हूँ तो मेरा मन उल्लास से भर उठता है। सच एक अजीब नैसर्गिक अनुभूति होती है न जाने तुम्हारे अन्दर वो कौन सा आकर्षण है जो बर बस मूझे तुम्हारी आरे आकर्षित करता चला जा रहा है। काश तुम मेरी अर्न्तहीन वेदना को जान पाती। ये समझ पाती की मेरे दिल में तुम्हारें लिए कितनी चाहत है सजनी, मेरे हृदय रुपी मंदिर में तुम्हारे प्यार का असंख्य दीपक प्रज्जवलित हो रहे है, मेरे हृदय में तुम्हारे प्यार का विशाल सागर सहरा रहा है। जिसकी प्रत्येक तरंग तुम्हारे प्यार का विशाल सागर सहरा रहा है। जिसकी प्रत्येक तरंग तुम्हारे प्यार का संदेश पावन सुनाकर मेरे मनको झंकृत कर देती है। लेकिन हाय फिर यू ही एका एक छोड़कर विलूप्त हो जाती है। सचमूच जब भी किताबें खोलता हूँ तो किताब के उन पन्नों पे तुम्हारी खूबसूरत अलौकिक सौन्दर्य और उन पर छपे शब्द तुम्हारी प्रशंसा करते है। फिरंगे तुम मूझे चाहो या ना चाहो हक है मूझकों मेरी, मेरी बात और है।

दलित

नूतन 'लता'

रंग रूप तुमसे भिन्न नहीं,
दो हाथ दो पैर तुम्हारे भी,
बिल्कुल मेरी ही तरह।
हाँ रंग भी एक जैसा साँवला।।
समानता तो है,
फिर कैसा बहिष्कार ?
क्यों सहते हो सब कुछ
पीड़ित हृदय के साथ?
करते नहीं प्रतिकार।।
याद रहे –
स्वंय ही कुछ नहीं होता,
शोषित होते रहेनिरन्तर।
पीढ़िंया बीतने के साथ ही ,
कोई आवाज नहीं उठती
और शायद इसी क्रम में
तुम भी हो।।

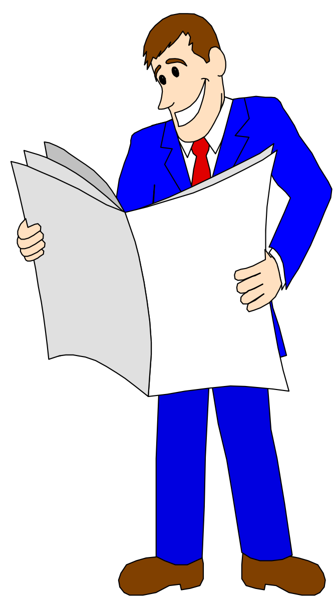

जुकाम

6 ग्राम अदरक के बारीक टुकड़े करें व 7 ग्राम काली मिर्चो को कूट लें फिर बीस ग्राम पुराना गुड़ मिलाक सबको ढ़ाई सौं ग्राम पानी में औटायें। चौथाई पानी रहने पर उतार कर छान लें और पी जावें। दो–तीन दिन सेवन करने से जुकाम दूर हो जाएगा।

खांसी

1. दस–पन्द्रह तुलसी के पत्ते और आठ–दस काली मिर्च की चाय बनाकर पीने से खांसी जुकाम वे बुखार ठीक हो जाता है।

2. आंवले की पसी को सुखाकर चूर्ण बनाकर और बराबर मिश्री मिला लें। 6 मशा सुबह शाम ताजे पानी से खावें। पुरानी से पुरानी खॅासी ठीक हो जाएगी।

3. मुलहठी, काली मिर्च एक–एक तोला भून कर पीस लें और ढ़ाई तोला पुराने गुड़ में मिला लें। मटर जितनी गोलियॉ बनाकर ताजे पानी के साथ सेवन करें। खॉसी जड़ से ठी हो जायेगी।

पीलिया रोग की औषधि

पहचान : इसमें सारे शरीर का रंग पीला पड़ जाता है तथा आंख और नाखून भी पीले पड़ जाते है।

1. पांच तोला मूली के पत्ते का अर्क निचोड़कर एक तोला मिश्री मिला लें और बासी मुंह पियें। यह पीलिया के लिए रामबाण औषधि है। इससे एक हफ्ते के अंदर पीलिया रोग दूर हो जाता है, किंतु दो माह तक हल्दी और दूध नहीं खाना चाहिए।

2. खट्‌टे अनार का रस आंखों मे लगाने से तीन दिन के अन्दर पीलिया रोग दूर हो जाता है।

3. जहां तक हो सके कच्चे पपीते को बिना मिर्च मसाले की सब्जी तथा पका हुआ पपीता खाये इससे पीलिया रोग में शर्तिया लाभ होगा।

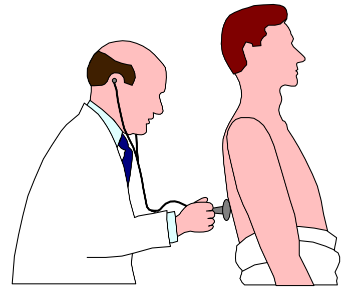

पेशाब बन्द होना

1. किसी बर्तन में पानी गुनगुना करें और उसमें नंगे बैठ जायें इसमें पेशाब अवश्य खुल जायेगा।

2. लिंग की सुराख में तेल रखने से पेशाब आता है।

3. नाभि में राख एक डली रखकर एक दो बूँद पानी डालें। कुछ देर बाद पेशाब खुल जायेगा।

हताश क्यों! हताश क्यों! हताश क्यों! हताश क्यों!

हताश क्यों!

गुप्त रोग का ईलाज
अब बिल्कुल आसान

क्या आप गुप्त रोग के शिकार है? आप निःसंतान दम्पत्ति है?

यदि आप **शादी से पहले या शादी के बाद** किसी भी प्रकार के गुप्त रोग जैसे **नपुंसकता, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, धातुरोग, पेशाब में जलन, कमरदर्द, कमजोरी, टेढ़ापन, खड़ा न होना** आदि रोगों से परेशान है। जगह–जगह इलाज करवाके सफलता न मिली हो तो आज हमारे गुप्त रोग **विशेषज्ञ डा. जी0एन0 दूबे एवं डा0 आर0 के0 तिवारी** अगले माह से आपके क्षेत्र देवरिया में बैंठेगे।

दाउजी क्लीनिक

सिविल लाईन्स, गोरखपुर रोड, देवरिया, यू0पी0

डा.जी.एन. दूबे
एवं
Mk- v kj -d s fr o kj h

खोज खबर

एक हजार साल में सबसे ज्यादा गर्म महीने

दुनिया भर के तापमान में दिन पर दिन बृद्धि हो रही है। ब्रिटिश विज्ञानियों का कहना है कि इस साल के पहले तीन महीने बेहद गर्म रहे है। पिछले एक हजार साल में तापमान में इतनी बृद्धि कभी नहीं हुई। गौरतलब है कि 1860 से तापमान को रिकार्ड बुक में दर्ज किया जा रहा है। हेडले स्थित मौसम विभाग के निदेशक डॉक्टर ज्यॉफ जेंकिंस का कहना है कि पृथ्वी और समुन्द्र की सतह पर तापमान में समानता है। लेकिन इसमें हो रही बृद्धि के लिए पूरी तरह मानव जिम्मेदार है। जेंकिस का कहना है कि 1961 से 90 के बीच के औसत तापमान को देखें, तो पता लगेगा कि सन 2002 के पहले तीन महीनों में तापमान 0०71 सेल्सियस की बृद्धि हुई है।

चिड़ियाघर में जानवर दिन को रात समझेंगे

सिडनी। जानवर रात को ही सक्रिय होते है, लेकिन चिड़ियाघर में लोग दिन के समय जाते हैं। ऐसे में उन्हें यहां बंद जानवर पूरी तरह सक्रिय नहीं दिखाई देते। यही देखते हुए यहां एक ऐसा चिड़ियाघर बनाया जा रहा है, जहां रात का वातावरण रहेगा। आस्ट्रेलिया में यह अनोखा वाइल्उलाइफ पार्क बनाने की योजना हैं, जहां कोआला भालू, कंगारु और जहरीले सांप बहुतायत में दिखाई देगें। यह इतने भव्य पैमाने पर तैयार किया जा रहा है कि इसे बनने में कई साल लगेंगे। वैसे कहा जा रहा है कि 2004 तक यह तैयार हो जाएगा। इस पर 16लाख डॉलर खर्च आएगा। इस पार्क की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह दिन में भी यहां रहने वाले जानवरों को रात का अनुभव होगा। यहां आने वाले दर्शक यह देख सकेंगे कि जानवर रात में कैसे रहते हैं। इस पार्क में जहरीले सांपो के साथ–साथ मकड़िया और खास तरह की चिड़िया भी होगी अधिकारियों का कहना है कि पार्क में आने अधिकारियों का कहना है कि पार्क में आने दर्शकों का सबसे बड़ा आकर्षक कोआला भालू होंगे।

ऊंचाई पर रहने वाली महिलाएं जल्दी बुढ़ी होती है।

कम उम्र और आकर्षक दिखने की कोशिश सभी की होती है, लेकिन कई बार पर्यावरण ही साथ नहीं देता। पहाड़ों और ऊंचे स्थानों पर रहने वाली महिलाओं के लिए एक बुरी खबर है। पेरु के विज्ञानियों ने इलाहाबादलिए एक शोध के बाद बताया है कि ऊंचे स्थानों पर रहने वाली महिलाएं जल्दी बूढ़ी हो जाती है। अध्ययनकर्ता डॉक्टर गुस्तावों गोंजालिस का कहना है कि इन महिलाओं में उस हारमोन का स्राव कम होता हे, जो युवा रहने के लिए उत्तरदायी हे। इसके लिए अध्ययनकर्ताओं ने पेरु के पहाड़ी इलाको में रहने वाली महिलाअें को अपने अध्ययन का विषय बनाया।

ब्लड के बाद अब बालों का बैंक

सैन फ्रांसिस्कों। बालों को बैंक में रखने का मकसद? यह बताने से पहले हम यह बता देना चाह रहे है कि इस बैंक में आपके खूबसूरत बालों के सैंपल बरसों तक सुरक्षित रखे जा सकते है। जमीन के नीचे बने इन सैंपल पर पानी, गर्मी, यहां तक की भूकंप का भी कोई असर नहीं होगा। यहां की हेयरोजेनिक्स नाम की यह कंपनी उन लोगों को सेंवाए दे रही है, जो उम्मीद करते हैं कि शायद किसी दिन बालों के डीएनए के क्लोन बना कर कम बालों वाले या पूरे गंजे हो गए लोगों के सिर पर घने बाल उगाएं जा सकें। अब तक इस लॉकर में 200 लोग अपने बाल जमा कर चुके है। इसके लिए तकरीबन ढाई हजार रुपये का भुगतान करना होगा। यों ज्यादातर लोग इसे बेकार का खर्च मान रहे है।

आप भी इस स्तम्भ के लिए कुछ खास खबर भेज सकते हैं। हम इसे अवश्य प्रकाशित करेंगे।

महिलाओं के लिए आभूषण जीतो प्रतियोगिता न0 1 का उत्तर

1. श्रीमती इंदिरा गॉधी 2. सुचित्रा कृपलानी, सुश्री मायावती 3.पी0टी0 ऊषा 4. सरोजनी नायडू 5. श्रीमती सोनिया गांधी 6. कमला गोन्दगी 7. फूलन देवी8. सरोजनी नायडू 9. किरन बेदी 10.हेमामलिनी

विशेष प्रश्न का उत्तर : ''लज्जा'' **विजेता :**

प्रथम पुरस्कार :
कु0 उमा शुक्ला (सोने की चेन)
पुत्री श्री एच0के0 शुक्ला
लालबाग कालोनी, राजरुपपुर, इला0

द्वितीय पुरस्कार :
कु0 स्नेह लता(सोने की अंगूठी)
मुत्री श्री बजरंगी लाल
चांदनी चौक, नई दिल्ली

तृतीय पुरस्कार :
कु0 पूजा गुप्ता(चांदी की पायल)
पुत्री श्री लव कुश गुप्ता
रोशन बाग, इलाहाबाद

चतुर्थ पुरस्कार :
कु0 रेखा सिंह(चांदी की अंगूठी)
पुत्री श्री शंकर लाल सिंह, जाफरा बाजार, गोरखपुर, उ0प्र0

विशेष पुरस्कार :
रुचि त्रिपाठी
चकरघुनाथ, नैनी, इलाहाबाद
पूजा गुप्ता (रोशनबाग)

नोट : डाक त्रुटि के लिए पत्रिका परिवार का कोई लेना देना नहीं होगा।

आपकी जुबान

सामग्री उत्कृष्ट एवं सारगर्भित है।

आदरणीय प्रधान संपादक

माननीय गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी जी

पत्रिका का अंक पढ़ा। बहुत ही उत्कृष्ट एवं सारगर्भित प्रतीत हुई। आधुनिक सामाजिक व्यवस्थाअें को चित्रित करता उपन्यास 'दिल का पैगाम' बहुत ही अच्छा लगा, इसके साथ श्री बुद्धिसेन शर्मा जी की रचना 'हिन्दी से अपन देश बढ़ेगा आगे' मन छू गयी और दार्शनिक भावों से ओत–प्रोत सम्पादकीय परिश्रम एवं पुरुषार्थ से समाज को नयी दिशा देने हेतु एक सशक्त विचार लगा।

धन्यबाद

आपका सहयोगाकांक्षी

ईश्वर शरण शुक्ल

सी/ओ श्री संजय शर्मा

125/1/4, चकदाउद नगर, नैनी, इलाहाबाद

पत्रिका को पढ़कर लिखने की इच्छा जाग्रत हुई

सेवा में,

सपादक महोदय

पत्रिका परिवार को मेरी तरफ अनेकों शुभकामनाएं। ईश्वर से यही कामना करती हुँ कि यह वर्ष पत्रिका व पत्रिका से जुड़े सभी व्यक्तियों के लिए खुशियां व सफलता साथ लाए।

आज बहुत समय पश्चात् पत्रिका के लिए कुछ लिखकर भेज रही हुँ। दिनभर की व्यस्तता के कारण अब लेखन के लिए समय नही निकाल पाती हूँ, किन्तु आज जब स्नेह पत्रिका को घर पर पढ़ी तो एक बार फिर मन में लिखने की तीव्र इच्छा जाग्रत हो गयीं। यह पत्रिका तो हमेश से अच्छे उद्देश्यों के साथ प्रकाशित होती रही है। पर भविष्य में इससे और बेहतरीन हो यही कामना है। यह अपने नाम को सार्थक करते हुए हर घर, हर व्यक्ति तक पहुँचे यही उम्मीद करते है। अन्ततः एक फिर विश्व स्नेह समाज पत्रिका के सभी सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाए।

जाग्रति नगरिया,

सुवाष नगर, नैनी, इलाहाबाद

"स्नेह को समर्पित"

'स्नेह' तुम्हारे अध्ययन से
हमने समाज को जाना है
व्यक्ति के व्यक्ति भावों से परिचय पाया है।
आधार तुम्ही हो जन–जन तक
अपनत्व के संदेश पहुँचाने को
धन्य है यह प्रयाग शहर
जिसमें अंकूर स्नेह का फूटा है
फैलेगी शाखाएँ वहॉ–2
जहॉ–जहॉ भारत का कोना–2 है
'स्नेह' तुम्हारे लेखों से
शहर हमारा महकेगा, प्रकाश तुम्हारा फैलेगा
'स्नेह तुम्हारें अध्ययन से
कुछ पंक्ति तुम्हें समर्पित है।

आर0के0तिवारी 'राज'

25 बी, महिला ग्राम कालोनी,

सुबेदारगंज, इलाहाबाद

दिल का चैन लूट लिया 'दिल के पैगाम ने'

सेवा में,

संपादक महोदय

पत्रिका में प्रकाशित धारावाहिक उपन्यास 'दिल का पैगाम' ने हम लोगों के दिल का चैन लूट लिया है। एक भाग पढ़ने के बाद लगता है अब आगे क्या होगा तुरंत अगले भाग को पढ़ने को जी मचलने लगता है। अगर आप इसके लिए कुछ और पेज बढ़ा दे तो बहुत ही अच्छा होगा। तथा आपकी महानता भी होगी। इस उपन्यास के लेखक को हमारे तथा हमारी सहेलियों की तरफ से ढेरों सारी शुभकामनाए।

पूजा सिंह एवं सहेलिया, सुलेम सराय, इलाहाबाद, **रेखा गौड़**,यू0पी0 कालेज, वाराणसी, **नेहा श्रीवास्तव**, न्यू कालोनी, देवरिया, **रमेश तिवारी**, सिवान, बिहार, इत्यादि।

खुला ऑफर खुला ऑफर खुला ऑफर

पत्रिका के सदस्य बनिए और जीतिए हजारों रुपये के ईनाम

समय पर मासिक पत्रिका

"विश्व स्नेह समाज"

आपके दरवाजे पर। इस सुविधा का लाभ उठाइये और अपनी चहेती पत्रिका को घर बैठे पाइये।देर मत कीजिए।

भारत में:

मूल्य वार्षिक (साधारण डाक से) रु050/00

(रजि0 डाक) रु0 100/00

विदेशों में (नेपाल व भूटान को छोड़कर) साधारण डाक से रु0 150/00

आजीवन सदस्य : रु0 1100/00

भुगतान का माध्यम चेक / मनीआर्डर/ डिमांड ड्राफ्ट। इलाहाबाद से बाहर चेकों के लिए रु0 20/00 अतिरिक्त राशि देय होगी।

कृपया चेक/ड्राफ्ट/मनीआर्डर निम्न पते पर भेजें। **प्रधान संपादक**

मासिक पत्रिका "**विश्व स्नेह समाज**"

नितिन काम्पलेक्स, मेवालाल की बगिया, नैनी, इलाहाबाद–8

भेजने वाले का नाम :...........................

....

डाक का पता : ....

हिंदी में डब फिल्म 'स्टार वार्स–दो'

अंगरेजी से हिंदी में डब की गई फिल्मों की श्रृखंला में नई फिल्म आई है 'स्टार वार्स एपिसोड–दो' 'ट्वेंटीएथ सेंचुरी फॉक्स' की यह फिल्म हॉलीवुड में अपनी काफी धाक जमा चुकी है। निर्देशन लुकास की इस फिल्म ने भारत के दर्शकों को भी आकर्षित किया है। यह फिल्म डार्थ जाथेर (हाईडन क्रिश्चयन) तथा पैडमें एमिडाला (नाटालाई पोर्टमेन) के प्रेम प्रसंग पर आधारित है। फिल्म में बॉलीवुड की अभिनेत्री आयशा धारकर ने नबू की महारानी जमीला की असरदार भूमिका निभाई है।

छोटे बजट की फिल्म ''द टुथ–यथार्थ'

एक डोम के जीवन पर पर आधारित फिल्म 'द टुथ–यर्थाथ' है। जो जीवन की त्रासदपूर्ण स्थितियों को संवेदनशील तरीके से सामने रखती है। साथ ही यह अवगत कराती है कि अब एक बार फिर छोटे बजट की सार्थक फिल्मों का दौर शुरु हो चुका है। रघुवीर यादव, मिलिंद गुणाजी, श्रद्धा निगम, सागरिका धवन, अशोक बंथिआ आदि कलाकारों के सटीक अभिनय से सजी –द टुथ–यर्थाथ' कथ्य और ट्रीटमेंट के लिहाज से काफी असरदार है। 'गिरिराज म्यूजिक ऐंड मीडिया एक्जिम लि.' की इस प्रस्तुति का निर्देशन किया है राजेश सेठ ने। फिल्म की कहानी, पटकथा और संवाद जलीस शेरवानी ने लिखें है।

लगातार दूसरे वर्ष 100 प्रतिशत रिजल्ट देने वाला
कक्षा : **IX, X, XI, XII** (9,10,11एवं12) के सभी वर्गो के लिए
जयप्रकाश दूबे तथा संजय मिश्रा द्वारा संचालित

2001–2002 में 60 प्रतिशत से अधिक अंक अर्जित करने वाले छात्र/छात्रायें:

1.निशांत मालवीया **2.**सारिक अहमद **3.**मनीषा तिवारी **4.**मनु खरे **5.**नीलम गौण **6.**पारुल राय **7.**राहुल यादव **8.**जाकिया बेग़म **9.**आंकाक्षा सिंह **10.**अल्का सिंह **11.**संगीता भारतीया **12.**छाया सिंह 13.पूजा शर्मा, **14.** ?आपकेलिए

बैचेज प्रारम्भ : 1 जूलाई 2002 से

शनि युनिवर्सल कोंचिंग

स्थान : प्रोग्रेसिव जू0हा0 स्कूल, राजरुपपुर, इलाहाबाद

द्वितीय शाखा : एस0डी0 जू0हाई स्कूल, झलवा, इलाहाबाद

खोयी हुई ताकत व जवानी पुनः प्राप्त कर अपने वैवाहिक जीवन को सफल बनायें

शादी से पहले या शादी के बाद यदि आप किसी भी प्रकार के गुप्त रोग जैसे **नपुंसकता, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, धातुरोग, पेशाब में जलन, कमरदर्द, कमजोरी** आदि रोगों से परेशान है। जगह–जगह इलाज करवाके सफलता न मिली हो तो आज ही हमारी **न्यू हेल्थ क्लीनिक के विशेषज्ञ डा. एम.आर.साही** से मिलकर लाभ उठायें।

नोट : निःसंतान दम्पत्ति स्वयं सम्पर्क करें।

हमारें यहां आधुनिक तरीके से तैयार यूनानी+आयुवेर्दिक पद्धति द्वारा सरल एवं सफल इलाज करवा के हर मौसम में वगैर किसी नुकसान के लाखों निराश रोगी नया जीवन पा चुके हैं। हमारे इलाज के तरीके का लोहा सर्वश्रेष्ठ गुप्त रोग विशेषज्ञ भी मानते है।

समय : प्रातः 9 बजे से रात्रि 8 बजे तक,
रविवार : प्रातः 9 बजे से दोपहर 2 बजे

न्यू हेल्थ क्लीनिक

सेन्ट्रल होटल बिल्डिंग, झॉ के सामने,
घंटाघर चौराहा, इलाहाबाद

एड्स एक जानलेवा रोग है, इससे बचिए।

स्नेंहागन कला केन्द्र

(गोकुल पब्लिक फाउन्डेशन सोसायटी द्वारा संचालित)

0सिलाई 0कढाई
0पेटिंग 0अन्य प्रोफेशनल कोर्सेस
0 इंग्लिश स्पोकेन (फ्री कम्प्यूटर एजुकेशन के साथ)

सम्पर्क समयः
प्रातः 9 बजे से 12 तक सांय 3 से 7 बजे तक

सम्पर्क स्थल :
एम0टेक0 कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर
कौशाम्बी रोड, ग्राम प्रधान की मकान, धुस्सा, इलाहाबाद

दूरदर्शन इलेक्ट्रानिक्स

53/38, भुसौली टोला, खुल्दाबाद, इलाहाबाद–211016
हमारें यहॅा सभी प्रकार की टी.वी.,डेक, ऑडियों, वीडियों और इलेक्ट्रॉनिक्स
नोटः विज्ञापन बोर्ड नए बनते है तथा रिपेयरिंग होती है।
प्रो0 हरिशंकर शर्मा

M-Tech

(COMPUTER EDUCATION CENTRE)

बच्चों के लिए समर कोर्स प्रारम्भ है।

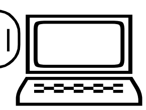

इग्नू द्वारा संचालित :
एम.सी.ए, बी.सी.ए. सी.आई. सी., डी.सी.ओ,
डोयेक नईदिल्ली द्वारा संचालितः ओ लेवल, ए लेवल
माखन लाल चर्तुवेदी रा0 प0विश्वविद्यालय द्वारा संचालित : पीजीडीसीए, डीसीए एवं **अन्य कोर्सेस** : टैली, जॉवा, विजूअल बेसिक, आटो कैड, सी++,3डी होम, ओरेकल, इंटरनेट

कम्प्यूटर द्वारा कुन्डली, जॉब वर्क, प्रोजेक्ट वर्क,विजिटींग कार्ड, शादी कार्ड, थीसीस

सम्पर्क करेः कौशाम्बी रोड, धुस्सा, ग्राम प्रधान की मकान,इला0

बम्पर प्रचार

20000/– प्रतिया निःशुल्क वितरित

इलाहाबाद में 10000/– प्रतियां

पत्रिका के एक वर्ष पूरे होने पर हम सितम्बर माह में एक विशेष विशेषांक प्रकाशित करने t k j gsgS ft l eage i jws **इलाहाबाद में 10000/–प्रतिया** तथा बाहर के जिलों में **(गोरखपुर, बनारस, लखनउ, कानपुर, रायबरेली, फतेहपुर, प्रतापगढ़) में शेष 10000/– प्रतियां निःशुल्क वितरित की जायेगी।** अतः आप सबसे अनुरोध है आप अपने विज्ञापन, संदेश के लिए अपना स्थान सुरक्षित करा लें। देर ने करें। मौका हाथ से निकल जायेगा। नहीं तो बाद 'अब पछतायें का होत है जब चिड़िया चुंग गई खेत'

समय किसी का इंतजार नहीं करता।

हमारा अगला अंक स्वतंत्रता संग्राम, सौन्दर्य तथा शिक्षा पर आधारित होगां। **साथ ही सौन्दर्य प्रतियोगिता,** युवा उपान्यासकार गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी **'नैना'** का धारावाहिक उपन्यास **'दिल का पैगाम'**, ज्योतिष, कम्प्यूटर, कैरियर, महिलाओं के कानुनी अधिकार **'हिन्दू विधवा अधिनियम'** इत्यादि ढेर सारी रोचक व मजेदार स्तम्भ। जानने के लिए पढे। अपनी विज्ञापन अभी से बुक करवा ले। नहीं तो सुनहरा मौका हाथ से निकल जायेगा।

अगले अंक में पढ़ना न भूलिए, अपनी प्रति अभी से बुक करा ले।

विश्व स्नेह समाज

मासिक पत्रिका

सम्पादकीय कार्यालयः

,एफ0सी0एल0सी,नितिन काम्पलेक्स,

मेवालाल की बगिया,, नैनी, इलाहाबाद–8

शाखा कार्यालयः

एम0टेक कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर

कौशाम्बी रोड, धुस्सा, इलाहाबाद

☎ 432953